रविवार
19 मई 2024

पृष्ठ 4

कपड़े धोने से जुड़ी कुछ सामान्य समस्याएं...

पृष्ठ 5

निखिल सिद्धार्थ की पैन-इंडिया फिल्म...

● देहरादून
● वर्ष 32
● अंक 109
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

आज का विचार

नारी की करुणा अंतरजगत का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए हैं।

– जयशंकर प्रसाद

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक
आर.एन.आई.- 59626/94
email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com
डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

78 लाख की स्मैक सहित बरेली की महिला ड्रग तस्कर दून से गिरफ्तार

●ड्रग्स की बड़ी खपत के चलते दून में ही बना लिया था ठिकाना

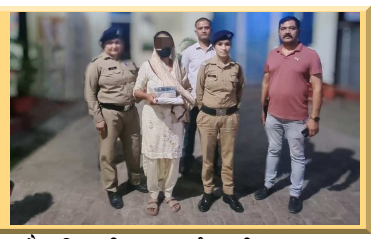

हमारे संवाददाता

देहरादून। 78 लाख रूपये की स्मैक सहित बरेली की एक महिला तस्कर को एसटीएफ द्वारा दून से गिरफ्तार कर लिया गया है। आरोपी महिला तस्कर का कहना है कि उत्तराखण्ड में नशे की बड़ी खपत के चलते उसने पिछले दो तीन सालों से दून में ही अपना ठिकाना बना लिया था।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एसटीएफ आयुष अग्रवाल ने बताया कि बीते रोज एसटीएफ की एएनटीएफ टीम (एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स) द्वारा एक सूचना के बाद थाना डोईवाला पुलिस के साथ मिलकर एक संयुक्त कार्यवाही की गयी। जिसमे संयुक्त टीम द्वारा डोईवाला क्षेत्र से महिला तस्कर ताहिरा खातून पत्नी जाकिर हुसैन निवासी ग्राम नई बस्ती कुडकावाला डोईवाला को 259 ग्राम स्मैक के साथ 'गिरफ्तार किया गया है। जिसने पूछताछ में बताया कि वह बरामद स्मैक बरेली से लेकर आई थी, इस पर एसटीएफ को आरोपी महिला से पूछताछ में अन्य कई ड्रग्स पैडलरो के नाम की जानकारी हुई है जो डोईवाला क्षेत्र में ताहिरा खातून से स्मैक खरीदते थे और डोईवाला क्षेत्र में विशेष कर जॉली ग्रांट क्षेत्र में रहने वाले छात्रों को विक्रय करते थे। एसटीएफ द्वारा प्रकाश में आए इन सभी पैडलरों की लिस्ट तैयार की गई है जिन पर अलग से कार्यवाही की जायेगी।

पकड़ी गई महिला तस्कर द्वारा बताया गया कि वह मूल रूप से बरेली उत्तर प्रदेश की रहने वाली है। जहां पर उसे इस धंधे के बारे में जानकारी हुई और वह बड़े ड्रग डीलरों से संपर्क में आई और फिर विगत 5ख्6 साल पहले डोईवाला के कुडकावाला क्षेत्र में रहने को आ गई और बरेली से यहां स्मैक सप्लाई करने लगी। जिसके लिए उसने डोईवाला के कुडकवाला वाले क्षेत्र में अपना एक मकान भी विगत दोख्तीन साल में बना दिया है। जहां से यह सारा माल स्थानीय ▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

श्री केदारनाथ धाम में तीर्थयात्रियों के लिए व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं को रात दिन दुरस्त करने में लगे है कार्मिक

कार्यालय संवाददाता

रुद्रप्रयाग। श्री केदारनाथ धाम में दर्शन करने पहुंच रहे तीर्थ यात्रियों की यात्रा सुगम, सुव्यवस्थित एवं सुरक्षित ढंग से संचालित हो इसके लिए जिला अधिकारी के निर्देशन में सभी विभागों द्वारा अपनी अपनी व्यवस्थाएं एवं सुविधाएं यात्रा मार्ग से लेकर केदारनाथ धाम तक उपलब्ध कराई जा रही है ताकि किसी भी श्रद्धालु को कोई परेशानी एवं असुविधा न हो।

अधिशासी अभियंता डीडीएमए विनय झींकवान ने अवगत कराया है कि श्री केदारनाथ धाम में भारी संख्या में श्रद्धालु दर्शन करने आ रहे है जिस से कि कई स्थानों पर यात्रा मार्ग में स्थापित रेलिंग भी क्षतिग्रस्त हो रही है तथा यात्रियों की सुरक्षा के दृष्टिगत क्षतिग्रस्त रेलिंग का श्रमिकों द्वारा त्वरित गति से मरम्मत कार्य किया जा रहा है ताकि

किसी भी यात्री को कोई नुकसान न पहुंचे। उन्होंने यह भी अवगत कराया है कि कुबेर ग्लेशियर में फंसे बड़े बड़े पत्थर जो बर्फ के पिघलने के कारण बाहर निकल रहे है तथा कोई अप्रिय घटना घटित न हो तथा यात्रियों की सुरक्षा के दृष्टिगत ऐसे बड़े पत्थरों को श्रमिकों द्वारा हटाया जा रहा है। यात्रा मार्ग आवाजाही हेतु बाधित न हो यात्रा निरंतर संचालित होती रहे ▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

राहुल-अखिलेश की सभा में मची भगदड़, कई घायल

प्रयागराज । उत्तर प्रदेश के प्रयागराज से एक बड़ी खबर सामने आई है। फूलपुर में राहुल गांधी और अखिलेश की जनसभा में बेकाबू भीड़ के चलते भगदड़ मच गई। इस कारण दोनों नेता बिना बोले वहां से निकल गए। जानकारी के मुताबिक,

सपा प्रमुख अखिलेश के पहुंचते ही कार्यकर्ता बेकाबू हो गए। बैरिकेटिंग तोड़कर मंच तक पहुंचने लगे। भगदड़ में कई लोग हुए जख्मी हो गए। भगदड़ की वजह से मीडिया कर्मी के कैमरे का स्टैंड भी टूट गया। बता दें कि राहुल अखिलेश की साझा रैली फूलपुर के पंडिला में होनी थी। मगर इस घटना के कारण दोनों नेताओं ने रैली को पूरा संबोधित भी नहीं किया। प्रयागराज में कांग्रेस तो फूलपुर में सपा का प्रत्याशी चुनावी मैदान में है। दोनों के समर्थन में यह साझा रैली का आयोजन किया गया था। दोनों नेता सपा उम्मीदवार अमरनाथ मौर्य के समर्थन में जनसभा करने पहुंचे थे। लेकिन इस रैली में भगदड़ मच गई। इस कारण वहां दोनों नेता बिना कुछ बोले निकल गए। इसके बाद राहुल और अखिलेश की साझा रैली प्रयागराज के मुंगारी में हुई।

कश्मीर में आतंकवादियों ने की बीजेपी नेता की हत्या, टूरिस्ट कपल को मारी गोली

जम्मू। जम्मू-कश्मीर में एक ही दिन में दो आतंकी हमलों की खबर सामने आई है। अटैक में पूर्व बीजेपी सरपंच की मौत हो गई और कुछ लोग घायल हुए हैं। 18 मई को पहले शोपियां और फिर अनंतनाग में आतंकवादियों ने नागरिकों पर फायरिंग की। अधिकारियों ने बताया कि दोनों इलाकों की घेराबंदी कर दी गई है और हमलावरों को पकड़ने के लिए तलाशी अभियान शुरू किया गया है।

पहली घटना में आतंकवादियों ने शोपियां के हिरपोरा इलाके में रात करीब साढ़े दस बजे पूर्व बीजेपी सरपंच पर गोलियां चला दीं। उनकी पहचान एजाज

शेख के रूप में हुई है। गोली लगने पर उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया जहां उनकी मौत हो गई। दूसरी घटना अनंतनाग जिले की है।

आतंकवादियों ने अचानक एक टूरिस्ट कैंप पर गोलीबारी शुरू कर दी। हमले में जयपुर के दो लोग घायल हो गए। फरहा और उनके पति तबरेज। उन्हें गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया। कश्मीर जोन पुलिस ने एक पोस्ट में जानकारी दी कि आतंकवादियों ने अनंतनाग के यन्नार में जयपुर की रहने वाली महिला फरहा और उनके पति तबरेज पर गोलीबारी की और उन्हें घायल कर दिया। इलाके की घेराबंदी कर दी गई है।

जम्मू-कश्मीर के राजनीतिक दलों ने हमलों की निंदा की है। नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला और उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने भी आतंकी हमलों की निंदा की। बता दें, इस समय अनंतनाग-राजौरी सीट पर संसदीय चुनाव के लिए प्रचार चल रहा है। बारामूला में पांचवें दौर में 20 मई को मतदान होगा। इसी बीच ये हमले हो गए।

सुख और संतोष भी है सठियाने में

अंशुमाली रस्तोगी

हालांकि मेरी अभी उम्र नहीं है सठियाने की लेकिन मुझे महसूस होने लगा है कि मैं सठिया गया हूं। थोड़ा-बहुत नहीं बल्कि उम्मीद से ज्यादा सठिया गया हूं। मेरा सठियानापन इतना बढ़ गया है कि क्या घर, क्या बाहर, मैं खूब दुत्कारा जाने लगा हूं। इसे मैं अपनी खुशकिस्मती समझता हूं कि कथित समझदारों, बुद्धिजीवियों, प्रगतिशीलों की भीड़ में एक अकेला मैं ही सठियाया हुआ हूं। यकीन कीजिए, पहले मैं सठियाये लोगों को बेहद हेय दृष्टि से देखा करता था। उनसे बात तक करना अपनी तौहीन समझता था। लेकिन इधर जब से मुझे खुद सठियाने का रोग लगा है, मैं दूसरे सठियाये लोगों की भावनाओं को अच्छे से समझने लगा हूं। मैं यह मानने लगा हूं कि सठियाना बीमारी नहीं बल्कि दिमागी एवं वैचारिक स्वतंत्रता की निशानी है। सठियाया आदमी ज्यादा बेहतर तरीके से खुद को अभिव्यक्त करने की क्षमता रखता है। उसे न किसी का डर होता है, न खुद के कहे पर शंका। यही वजह है कि अब मैं ज्यादा बेहतर तरीके से खुद को व्यक्त कर पा रहा हूं। किसी भी मुद्दे पर मैं अपना बेबाक सठियाया नजरिया तुरंत रख देता हूं। साहित्य से लेकर समाज तक किसी भी गंभीर या अ-गंभीर मसले पर आप मेरी श्सठियायी राय्य ले सकते हैं। हां, मेरी श्सठियायी राय्य को मानना या न मानना आपका काम है! न-न मुझे इस बात की रत्ती भर फिक्र नहीं रहती है कि लोग मेरे बारे में क्या-क्या और कैसा-कैसा कहते हैं। उनके श्कहन्े्य के डर से मैं अपना सठियानापन नहीं त्याग सकता। मैंने तो ऐसे-ऐसे समझदार लोग देखे हैं, जो दावा समझदारी का करते हैं, किंतु रहते हर वक्त सठियाये हुए हैं। समझदारी का मुल्लमा चढ़ाकर अपने सठियाने को वे छिपा सकते हैं परंतु मैं कभी नहीं। मैं तो बे-खौफहोकर कहता हूं कि मैं सठिया गया हूं। बिना सठियाये आप नहीं जान सकते सठियाने का सुख। मुझे खुशी होती है, जब लोग-बाग मुझे श्सठिया गया्य कहते हैं। मेरी कोशिश रहती है कि मैं ज्यादा से ज्यादा सठियानापन अपने लेखन व व्यंग्यों में ला सकूं ताकि सामने वाले को पढ़कर यह लग सके कि यह किसी श्सठियाये हुए लेखक्य का लेखन है। मुझे अपने सठियाने पर सबसे अधिक संतोष बुद्धिजीवियों से असहमति रखकर होता है। बुद्धिजीवी वर्ग जिन चीजों-बातों को नकारता है, उसे मैं स-हृदय अपनाता हूं। बुद्धिजीवी वर्ग जिस पूंजीवाद, बाजारवाद, अमेरिकावाद का विरोध करता है, उसका मैं समर्थन करता हूं। जिन प्रगतिशील रास्तों पर चलने को बुद्धिजीवी वर्ग कहता है, मैं उसके विपरीत चलना पसंद करता हूं। बुद्धिजीवी वर्ग लगातार नेताओं को बुरा-भला कहता रहता है, मैं उन्हें लोकतंत्र का सबसे भोला-भाला व्यक्ति कहता हूं। इन असहमतियों पर अगर कोई मुझे सठियाया हुआ कहता है तो कहे, मेरी सेहत पर फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि मैं श्दोगला चरित्र्य लेकर न जीना चाहता हूं, न मरना। मेरी पहचान अगर सठियाये हुए लेखक या व्यक्ति की बन रही है तो बनती रहे। कागजी बौद्धिक बनने से बेहतर है, सठियाया हुआ घोषित होना।

उन्हें तो आदत है भूल जाने की...

विलास जोशी

उन्होंने कितनी आसानी से कोर्ट में यह कह दिया कि 'मैंने तो व्यंग्य करने के लिए कहा था, लेकिन क्या कहा था, यह मुझे याद नहीं।' यह कहते हुए वे यह भूल गए कि व्यंग्य करने वाले को अपनी ही बोली गई बात के 'मुख्य कथ्य' को याद रखना कितना जरूरी होता है, क्योंकि, व्यंग्य करना कोई आसान बात नहीं है। व्यंग्य करना दुधारी तलवार पर चलने से कम नहीं होता। फिर यह बात भी सही है कि जो शख्स दिनभर कुछ न कुछ बोलता ही रहता हो, उसे अपनी ही बोली गई बातें कितनी याद रहती होंगी भला? उन्हें यह तो याद होगा कि उनके ही पार्टी के कई वरिष्ठ नेता उन्हें कई बार यह समझाइश दे चुके हैं कि 'राजनेताओं को सार्वजनिक जगह बोलते समय बहुत सोच-समझकर बोलना होता है। क्योंकि 'शब्द' और 'सोच' कई बार बहुत मुसीबतें खड़ी कर देती है।' प्राय: कई बार अपनी बोली बात, हम स्वयं ही समझ नहीं पाते हैं और न ही किसी दूसरे को समझा पाते हैं। संभव है उनके साथ ऐसा ही कुछ हुआ हो? राजनेताओं के लिए तो यह एक खूबसूरत बहाना है कि 'मुझे याद नहीं रहा मैंने उस समय क्या कहा था।' देखिए न, इनसान की यह भी एक शानदार फितरत है कि उसे अपने मतलब की बातें तो याद रहती हैं, जबकि वह दूसरे के मतलब की बातें भूल जाता है या भुला देता है। जबकि यादें हमें मिली हुई एक सबसे बड़ी नियामत है, जिसे हम अपने जेहन से भगाना भी चाहें तो भी वह हमारे अंतर्मन से लिपटी रहती हैं। ऐसी बात नहीं है कि केवल राजनेता ही भूलने के आदी होते हैं। प्रेमी-प्रेमिका भी इस मामले में किसी से कम नहीं होते। जब कभी किसी कारण प्रेमिका, अपने प्रेमी से मिलने तय समय पर और तय स्थान पर नहीं आती है तो वह भी बहुत आसानी से अपने प्रेमी से कहती है 'यार मैं भूल गई थी, सो सॉरी।' जबकि कुछ प्रेमी ऐसे भी होते हैं जो अपनी प्रियसी सामने आते ही कहते है 'आजकल कुछ याद रहता नहीं, एक तेरी याद आने के बाद।' उनके भूल जाने की बात पर एक शे'र याद आया –

'कोई करे सितम उन्हें समझाने की, उन्हें तो आदत है भूल जाने की।'

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वा।
त्वं यज्ञेष्वीड्य:।।

(ऋग्वेद ८-११-१)

हे सर्व अग्रणी परमेश्वर ! आप ही समस्त संसार को अपने नियमों के अनुसार चलाते हो। आप ही कर्मों के अनुसार फल प्रदान करते हो। आप ही सर्वप्रथम स्तुति के योग्य हो। आप की प्रेरणा से हम भी शुभ कर्म करें।

विकास मेरे शहर का !

पिछली स्याही का और आगे का हिस्सा (भाग तृतीय जारी)

●नरेन्द्र कठैत

ऐसे ही मेरे इस शहर में फैशन के एक से एक स्टाइलिश नमूने निकलते रहे। उस समय फैशन के मामले में पेरिस पीछे था और पौड़ी आगे। लेकिन आज शहर के हालात आप देख ही रहे हैं।

दूसरी कहावत पौड़ी वासीयों के लिए ये प्रचलित थी कि किसी से भी सेखी बघारने के लिए या किसी के दवाब में आने से पूर्व -पौड़ी वासी कहता था-कि 'इनै सूण! म्यरु घाट-घाटौ पाणी पीयूं! मैं सणी बेकूब नि समझी वा!' (कम हियर! मैंने घाट-घाट का पानी पिया है, मुझे वेबकूफ मत समझना डियर!!)। थोड़ा मनन किया और मनन के बाद निष्कर्ष ये निकला कि 'घाट-घाट का पानी पिया है' कहने का आशय श्रीनगर के धोबी घाट और नान घाट से इस शहर में पहुंच रहे पानी से ही रहा होगा।

लेकिन अब इस शहर के वे सब बम्बू उखड़ चुके। कनाथ-परदे सब बदल गए हैं। और धरातल पर - कुत्ते, कूड़ा, कचरा, सुअर, बन्दर, किरायेदार और हम जैसे कुछ किरदार रह गए हैं। जो न इधर के हैं-न उधर के हैं।

सबसे पहले किरायेदारों से क्षमा निवेदित है। आप कुत्ते, कूड़ा, कचरा, सुअर, बन्दर और हम जैसे नमूनों के साथ अपने उल्लेख को अन्यथा न लें।

किरायेदार बंधुओं...! किरायेदार होना कोई बुरी बात नहीं है- हमारी मजबूरी है। वर्ना कौन नहीं चाहता -शहर में उसका भी मकान हो। मकान के नीचे दुकान हो। लेकिन जरूरी नहीं कि हर किसी के भाग्य में मकान और दुकान दोनो हो। जहां तक किरायेदार की बात है तो इस शहर में इस प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री, भारत सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री अग्रज श्री निशंक जी भी किरायेदार रह चुके हैं। एक समय तो ऐसा भी था जब उन्होंने तंगहाली में भी दो-दो जगह का किराया चुकता किया। एक जगह चारपाई का दूसरी जगह प्रेस का।

इस शहर में वे नौनिहाल जो पढ़ रहे हैं- और किराया दे रहे हैं। मन लगाकर पढ़ते रहें। मकान मालिक अगर बात-बात पर खिच-खिचकर करे-तो अपने कानों पर रूई डाल दें। और अगर वो किराया देने पर भी बार-बार कमरे में घुसकर अपनी धौंस दिखाए-तो झगरा मोल न लें। कमरा बदल दें। भई! ऐसी मुसीबतें तो तुलसी दास जी भी- काशी में बहुत झेले हैं। प्रो. काशीनाथ सिंह ने अपनी पुस्तक 'काशी का अस्सी' में 'सन्तों झगरा में झगरा भारी' अध्याय में लिखा है- 'तुलसी बाबा अस्सी घाट पर आए और डेरा-डंडा जमाया। बड़ी मुश्किलें झेलनी पड़ी उन्हें,कभी लंगोटी गायब होती, कभी धोंकरा, कभी लुटिया,कभी कंमडल, कभी पोथी। वे भागते फिरे यहां से वहां-कभी गोपाल मन्दिर, कभी हनुमान, फाटक,कभी राजा दरवाजा,कभी बिन्ध माधव मन्दिर, बड़ा दिक किया मुहल्ले ने।' लेकिन तुलसी बाबा ने न अस्सी छोड़ा न काशी।

मेरे नौनिहाल किरायेदारों...! आपके पास भी पौड़ी गांव में न सही पास में च्वींचा-कांडई-बैंज्वाड़ी गांव हैं। सर्किट हाऊस मोहल्ला, क्यूंकालेश्वर मोहल्ला, पितृ मोहल्ला, थाना मोहल्ला, न्यू विकास कालोनी, विकास मार्ग, लक्ष्मीनारायण से लेकर बुबाखाल और श्रीनगर मार्ग पर प्रेमनगर तक आपके विकल्पों की कमी नहीं। तुलसी बाबा का ध्यान करें -शहर कदापि न छोड़ें। मेरे भी तीन घनिष्ठ मित्र मेरे किरायेदार रहे हैं। और जब तक रहे अकड़ कर रहे।

बंधुओं! इस शहर में किरायेदारी की बहुत पुरानी परम्परा है। इस शहर में न सही कहीं और किरायेदार रहा हूं। इसलिए किरायेदारों की दिक्कतें जानता हूं। इसी शहर के निचले हिस्से में किराये पर रहने वाले नेपाली मजदूरों की दिक्कतों के किस्से भी मैंने खूब सुने हैं। दस बाई दस की खोली में भी वे दस-दस रहते थे। कुछ लोग कहते हैं वे कमरे नहीं मकबरे थे। लेकिन उन्हें कमरे कहें या मकबरे -उनमें वे मजदूर बेचारे दिन ही नहीं रात में भी बड़े तकलीफ में रहते थे। सोते हुए मनमाफिक करवट भी नहीं बदल सकते थे। एक ही करवट में सोते -सोते जब किसी की बांह दुखने लगे -या कोई करवट बदलना चाहे -तो वे करवट भी नहीं बदल सकते थे। इस मुसीबत से निबटने के लिए उन्होंने एक तरकीब अपनानी शुरू की। कह नहीं सकते वो उनमें से किस नेपाली के दिमाग की उपज थी। लेकिन सुना है बड़ी कारगर साबित हुई। उनमें से एक ही करवट लेटे लेटे जिसकी बांह पहले दुखती-उसको तीन अक्षर के एक शब्द कहने की अनुमति दे दी गई थी। वह शब्द था- 'फरको!' याने की 'पलटो' अर्थात 'सब एक साथ पलटो!' बंधुओं! इस शहर के विकास को उलटने-पलटने वालों ने नहीं ऐसे ही मेहनत कश लोगों ने गति दी।

अगर कोई ये सवाल पूछे कि- 'इस शहर में सबसे ज्यादा दुर्गति किसकी हुई? तो एक ही जवाब है- कुत्तों की! उनको अलग चारपाई, अलग गद्दा, अलग थाली,अलग चम्मच की आदत किसने डाली? सुबह-साम मालिक के साथ घूमगस्ती। लेकिन आप हैं कि ही शहर ही छोड़कर चले गए। कुत्ते घर के रहे न घाट के । बेचारे सड़क पर आ गए। दुनिया का क्या? उन्हीं के सामने कह देते है-'ये आवारा कुत्ते हैं!' लेकिन कोई उन्हें एक रोटी का टुकड़ा तक नहीं देते हैं। सत्य कहें कुत्तों की ऐसी विकट परिस्थिति में हर भर के 'बूचड़ खाने' ही उनके अनाथालय हैं।

लेकिन शहर के सुअरों की भी बड़ी कुदशा है। आदमी उनसे चिढ़ते हैं और कुत्ते उनपर भौंकते हैं। जबकि शहर भर में सूअर ही एक ऐसे हैं जो पूर्णत: आत्मनिर्भर है।

एक और है इस शहर के अन्दर। वो है- बन्दर! ये बन्दर बाल बच्चों के संग हैं। संगठित हैं लेकिन मर्यादा विहीन नंग धड़ंग हैं। कुत्तों, सुअरों के बाद ये शहर में हालिया घुसपैठिए हैं। मौका मिलते ही जहां चाहे धावा बोल देते हैं। बॉउन्ड्री के अन्दर आने के बाद बन्दर कभी ये नहीं पूछते- 'अरे भाई कोई घर में है?' या- 'है कोई इस घर के अन्दर?' वे पास पड़ोस में किसी से पूछताछ करके भी नहीं आते। कि फलां व्यक्ति के घर पर कोई है या नहीं है? वे केवल ये देखते हैं कि आस-पास जो बैठे हैं -वे ऊंघ रहे हैं- या जाग रहे हैं। और जब तसल्ली हो जाती है तो इतमिनान से अन्दर घुस जाते हैं। जो कुछ उन्हें मिल जाय -खाते हैं। जितना हो सके उत्पात मचाते हैं। और कभी-कभी आटे का थैला खाली कर 'आटा स्नान' कर चुपके से बाहर निकल जाते हैं।

शहर के कुत्ते, कूड़ा, कचरा, सुअर, बन्दर और किरायेदार के बाद-हम हैं जो कुछेक हैं। आप फिर पूछोगे- 'हम कुछेक कौन है?' ऊपर लिखा तो है - 'नमूने हैं!' आप आगे पूछोगे-'हम नमूने कैसे हुए?' अरे हुए तो वैसे ही जैसे 'विकास' हुए। लेकिन हमारी बात कुछ है। जैसे लोग कहते हैं मैं मौन हूं। वैसे ही सब मौन हैं। दरअसल ये मौन ही हमारी साध ना है। अगर हमें न्याय संगत तराजू पर तोलें-तो एक पले एक पलड़े में हमारा मौन मिलेगा दूसरे पलड़ में हमारी साध ना। लेकिन साधना में हैं तो क्या हम घंटा-शंख न बजाएं। लेकिन आप ये आरोप लगाते हैं कि - जहां हाथ उठाने की जरूरत होती है वहां हम सावधान मुद्रा में आ जाते हैं- और जहां टांग रखने की जगह नहीं होती-वहां टांग अड़ा देते हैं।

एक ने पूछा -'ये किसने कहा?'

मैंने जवाब दिया-'विकास' ने!

-'अरे वो 'विकास' जो कई दफा फेल हुआ- और आप उससे डर गए! '

मैंने कहा-'डरा नहीं खड़ा रहा। और मैं मरते दम तक खड़ा रहूंगा! मालूम है पिछली रात मैंने सपने में क्या देखा?'

-क्या देखा?

-मेरे आस-पास शहर भर के लोग जमा हैं। कुछ लोग कह रहे हैं- मुझपर राजनीति का भूत सवार है। वे चिंता में हैं कि मेरा ये राजनीति का भूत कैसे उतरे? कुछ लोग कह रहे हैं - इसको उठना चाहिए। और कुछ लोग कह रहे हैं -नहीं इसको नहीं उठना चाहिए! लेकिन किस्सा कुर्सी का था। मैं जानता हूं मुझमें उठने की क्षमता नहीं है- लेकिन मैं उठा! सपने में ही देख रहा कि इस बार का चुनाव भी कूड़े कचरे के मुद्दे पर ही लड़ा जा रहा। मैं भावावेश में प्रतिद्वंदी को सरेआम 'कचरा' बोल गया। फिर प्रतिद्वंदी ने भी भरी जनसभा में मुझे 'कूड़ा' कहा। जब तक चुनाव नहीं निबटा तब तक शहर भर में 'कूड़ा' और 'कचरा' ही छाया रहा। शहर ही नहीं पूरे जनपद में 'कूड़े' और 'कचरे' की ही चर्चाएं होती रही।

लोगों में एक ही चिंता आम थी कि- इस छोटे से शहर का ये हाल है तो प्रदेश और देश के कूड़े और कचरे की स्थिति तो और भी भयानक होगी।

विकास यात्रा जारी है...

साभार: नरेन्द्र कठैत के फेसबुक पेज से

चुनौतियों भरी राह पर नई शिक्षा नीति

प्रो० एमपी सिंह

नई शिक्षा नीति (एनईपी)-2020 क्रियान्वयन के चौथे बरस के सफर पर तेजी से अग्रसर है। यह किसी बड़े सपने के साकार होने के मानिंद है। हालांकि, नई शिक्षा नीति की राह अभी चुनौतियों से भरी नजर आती है। इन चुनौतियों से पार पाने को मंथन की दरकार है। बारहवीं के बाद किसी विद्यार्थी के महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में प्रवेश करने के बाद वहां से बाहर निकलने की राह को सुगम किया गया है। कम समय में योग्यता की कसौटी पर खरा उतरने के साथ ही पाठ्यक्रम की अवधि को अप्रत्याशित रूप से परिवर्तित किया गया है। यह निश्चित तौर पर अभूतपूर्व कदम है।

यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि यदि किसी विद्यार्थी ने प्रथम वर्ष किसी अमुक विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण किया है, लेकिन यदि प्रथम वर्ष के बाद विद्यार्थी वह संबंधित संस्थान को छोड़ देता है, तो उस संस्थान पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इस बात को इस तरह भी समझ सकते हैं कि नई शिक्षा नीति में प्रदत्त प्रावधान के तहत यदि किसी विश्वविद्यालय में 100 विद्यार्थियों की क्षमता है, लेकिन प्रथम वर्ष उत्तीर्ण कर लेने के बाद ही यदि 30 से 40 फीसदी विद्यार्थी संबंधित संस्थान को छोड़ देते हैं, तो ऐसी स्थिति में संस्थान के सामने द्वितीय वर्ष में अपने संसाधनों के प्रबंधन की चुनौती होगी। शिक्षकों से लेकर शैक्षणिक कर्मचारियों एवं संस्थान की अन्यान्य व्यवस्थाओं पर प्रतिकूल प्रभाव होगा। अकादमिक स्तर भी प्रभावित होगा। संस्थानों की इस चुनौती के समाधान को मंथन आवश्यक है। धरातल स्तर पर कार्य किए जाने की दरकार है। हमें इस तरह से कार्य योजना बनाने की आवश्यकता होगी। इससे इन संस्थानों में शिक्षकों की संख्या से लेकर दीगर इंस्टीट्यूट्स के बीच संतुलन व्यवस्थित किया जा सके।

चुनौती के समाधान के क्रम में पहला है कि पाठ्यक्रम के बीच में संस्थान छोड़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या को सीमित या निर्धारित किया जाए। द्वितीय शुल्क निर्धारण करते समय शुल्क को घटते क्रम में रखे, जिससे संस्थान/पाठ्यक्रम को बीच मे छोड़ने की प्रवृत्ति को घटाया जा सके। अंततः इसके फलस्वरूप सकल नामांकन अनुपात को 2035 तक वर्तमान 27 प्रतिशत से बढ़ाकर निर्धारित लक्ष्य 50 प्रतिशत तक किया जा सके। इसके क्रियान्वयन के बाद भविष्य की चुनौतियों पर अभी से कार्य योजना बनाकर समाधान की राह तलाशनी है। दूसरे क्रम में अब नई शिक्षा नीति-2020 में प्रदत्त प्रावधान के तहत क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षण कार्य करने पर पुरजोर वकालत की गई है। यह पूरी तरह सबके अनुकूल है। निज भाषा में निश्चित तौर पर विद्यार्थी विषय को बेहतर समझ सकता है। लेकिन दूसरे पक्ष पर गौर करें तो क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई करने के बाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्द्धा में विद्यार्थियों को गंभीर चुनौतियों का सामना करने का अंदेशा है। देश के साथ ही विदेश में भविष्य को आकार देने की मंशा रखने वाले स्टुडेंट्स के सामने भाषा की चुनौती अवरोध बन सकती है। यहां किसी भाषा पर सवालिया निशान नहीं है, लेकिन इस बिंदु पर भी गौर करने की आवश्यकता है, मौजूदा अधिकांश पाठ्यक्रम अंग्रेजी में पढ़ाया एवं लिखाया जा रहा है। भाषा संबंधी यह चुनौती कहीं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारे महत्व को कमतर न साबित कर दे। इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

तीसरी और महत्वपूर्ण बात कि नई शिक्षा नीति के मुताबिक हमारे शिक्षकों को भी तैयार होना होगा। यूं भी एक अच्छा शिक्षक वही है, जो पूरी तैयारी के साथ अपने विद्यार्थियों का ज्ञानार्जन करे। यदि हम आंकड़ों पर गौर करें, तो भारत में छात्र-छात्राओं की कुल संख्या लगभग 35 से 40 करोड़ होगी। यानी, हमारी कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत। नई शिक्षा नीति को धरातल पर क्रियान्वित करने में सबसे अहम भूमिका हमारे शिक्षकों की ही है। पुरानी शिक्षा पद्धति में रचे- बसे शिक्षकों को मौजूदा ढांचे के अनुसार तैयारी करनी होगी। प्रतिस्पर्द्धी युग में अब विद्यार्थियों के बेहतर कल का निर्माण करने को शिक्षकों को भी तैयार होना होगा। प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षकों को नई शिक्षा नीति के सांचे में स्वयं को ढालने की आवश्यकता होगी, अन्यथा नई शिक्षा नीति की सार्थकता को सिद्ध होने में कठिनाई हो सकती है। इसी क्रम में यूजीसी की ओर से स्थापित 111 मदन मोहन मालवीय अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना एक मील का पत्थर साबित होगा। इनके माध्यम से अगले 3 वर्षों में 15 लाख गुरुजनों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। चतुर्थ और अंतिम बात यह है, अभी आईआईटी जैसी संस्था को हम इंजीनियरिंग की पढ़ाई के रूप में पहचानते हैं। आईआईएम को मैनेजमेंट की पढ़ाई के लिए जानते हैं। इन उच्च संस्थानों की मूल संरचना और इनका अध्यापन इसी दिशा पर कार्य करता है। अंदेशा है, अब ऐसे बहु प्रतिष्ठित संस्थानों को बहु-विषयक बनाने पर कहीं ये अपनी मूल संरचना और मूल भावना से विरत न हो जाएं। ऐसा न हो कि अधिकतम के चलते न्यूनतम भी अर्जित होने से रह जाए। हालांकि, फिलहाल तो ऐसा नजर नहीं आता। बावजूद इसके अध्ययन और अध्यापन के दौरान इन बिंदुओं की अनदेखी भी नहीं की जा सकती है ।

(लेखक आईआईएम, अहमदाबाद के पूर्व छात्र एवम् तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यूपी) में निदेशक - छात्र कल्याण हैं।)

(लेखक के ये अपने निजी विचार हैं)

प्रतिदिन स्नान करना आवश्यक क्यों ?

हर दिन स्नान करने से आप स्वयं को ताजा और ऊर्जावान महसूस करते हैं। हालांकि, कई बार ऐसा भी होता है कि आप दिन में एक बार भी स्नान नहीं कर पाते हैं, अगर ऐसा है और आपको न नहाने की आदत है तो आपको ज्ञात नहीं कि आप अपने स्वास्थ्य के साथ कितना बड़ा खिलवाड़ कर रहे हैं।

इस आर्टिकल में हम आपको बता रहे हैं कि हर दिन नहाने से क्या लाभ होता है। सबसे पहले नहाने से शरीर की गंदगी और मृत त्वचा निकल जाती है। आलस्य दूर भाग जाता है और शरीर में ताजगी महसूस होती है।

कुछ लोग डिओडेरेंट या गीले नैपकिन का इस्तेमाल करते हैं, इससे शरीर साफ हो जाता है लेकिन अंदर से फ्रेशनेस महसूस नहीं होती है। शरीर को साफ बनाएं रखने के लिए सही तरीके से स्नान करने की आवश्यकता होती है। प्रतिदिन नहाने के क्या फायदे होते हैं जानिए:

1. दुर्गंध दूर भगाएं - शरीर से आने वाली गंदी बदबू को प्रतिदिन स्नान से ही दूर भगाया जा सकता है। शरीर में बैक्टीरिया उत्पन्न होते हैं जिससे त्वचा में रासायनिक प्रक्रियाओं के चलते गंदी बदबू आने लगती है। ऐसे में डिओ आदि से बदबू तो दूर भाग जाती है लेकिन वो बैक्टीरिया नहीं मरते हैं।

2. मुहांसे दूर करे- प्रतिदिन स्नान करने से चेहरे पर कील मुहांसे नहीं होते हैं क्योंकि बैक्टीरिया से होने वाला संक्रमण नहीं हो पाता है। स्वस्थ और साफ त्वचा पाने के लिए प्रतिदिन स्नान करना आवश्यक होता है।

3. त्वचा पर बैक्टीरिया को दूर भगाए- आपको जानकर हैरानी होगी कि हमारी त्वचा पर लगभग 1000 प्रकार के बैक्टीरिया होते हैं जो त्वचा की नमी को छीन लेते हैं और उसे बेजान बना देते हैं। ऐसे में स्नान करने से ये बैक्टीरिया त्वचा पर नहीं रह जाते हैं।

4. त्वचा पर पड़ने वाले भूरे धब्बे - अगर आप नियमित रूप से स्नान नहीं करते हैं तो आपकी त्वचा पर भूरे रंग के चकत्ते पड़ सकते हैं। इस स्थिति को डर्मेटिटिस नेगलेक्टा कहा जाता है। अगर त्वचा में ये धब्बे पड़ने लगे हैं तो स्पष्ट अर्थ है कि आप अपनी त्वचा के प्रति लापरवाह हैं।

5. त्वचा की स्थिति बदतर होना - प्रतिदिन स्नान न करने से त्वचा सम्बंधी कई समस्याएं हो सकती हैं। सबसे पहले त्वचा में रूखापन आ सकता है, साथ ही खुजली या संक्रमण भी हो सकता है।

6. तैलीय बाल - अगर आप स्नान प्रतिदिन नहीं करते हैं तो बालों को कब धुलते हैं, शायद महीने में एक बार। अरे जनाब, ऐसा कतई न करें। हर दूसरे से तीसरे दिन बालों सहित स्नान करें। इससे बालों में गंदगी जमा नहीं होगी। साथ ही साथ आप गंदे-गंदे से नहीं दिखेंगे।

7. सामान्य गंदगी - स्नान न करने से आपकी बगलों से ऐसी बदबू आएगी कि आपको लगेगा कि सड़ा प्याज बदबू कर रहा है। साथ ही साथ त्वचा भी बहुत गंदी हो जाएगी।

गर्मियों में शरीर को भरपूर हाइड्रेशन और ठंडक दे सकते हैं तरबूज के ये 5 पेय

गर्मियों में आने वाले फलों में से एक तरबूज में भरपूर पानी और कई पोषक तत्व मौजूद होते हैं, जिस वजह से पोषण विशेषज्ञ इसे डाइट में शामिल करने की सलाह देते हैंहालांकि, अगर आपका बच्चा या घर में से कोई व्यक्ति तरबूज का सेवन करना पसंद नहीं करता है तो आप इस फल को स्वादिष्ट पेय का रूप देकर उन्हें इसके फायदे दे सकते हैं।आइए आज हम आपको तरबूज के विभिन्न पेय की रेसिपी बताते हैं।

तरबूज लेमनेड

इसके लिए पहले एक जग में तरबूज का रस और थोड़ा नींबू का रस मिलाएं।अब एक सॉस पैन में चीनी और एक कप पानी उबालें। जब यह मिश्रण ठंडा हो जाए तो इसे तरबूज वाले मिश्रण में मिलाएं।इसके बाद इसे गिलास में भरें और बर्फ के कुछ टुकड़े डालकर इसका आनंद लें।यह पेय इम्यूनिटी को बढ़ावा देने और पाचन को सुधारने में भी मदद कर सकता है।यहां जानिए गर्मियों के लिए लाभदायक अन्य पेय।

तरबूज की स्मूदी

सबसे पहले मिक्सी में तरबूज के टुकड़े, दूध और बर्फ को डालकर अच्छे से ब्लेंड करें, फिर इसे परोसें।अगर आप दूध का इस्तेमाल करना पसंद नहीं करते हैं तो योगर्ट से स्मूदी तैयार कर सकते हैं।इसके अतिरिक्त आप इस स्मूदी को नारियल पानी, बर्फ और थोड़े सोडे के साथ भी इसे बना सकते हैं। बस इसमें अधिक तरबूज के टुकड़े डालें।यहां जानिए त्वचा के लिए लाभदायक स्मूदी की रेसिपी और उसके फायदे।

तरबूज मोजितो

यह मीठे-रसदार तरबूज, खट्टे नींबू और ताजे पुदीने का एक उत्तम मिश्रण है।इसे बनाने के लिए तरबूज के टुकड़ों को अच्छे से ब्लेंड करें और फिर इसे छान लें।अब एक गिलास में नींबू का रस, पुदीने के पत्ते और थोड़ी-सी चीनी या शहद डालकर अच्छे से मिलाएं, फिर इसमें बर्फ डालें और इसके ऊपर तरबूज का रस डालें।इसके बाद गिलास में सोडा पानी डालें, फिर इसमें तरबूज के कुछ छोटे टुकड़े डालकर इन्हें परोसें।

वॉटरमेलन चिया कूलर

इसे बनाने के लिए सबसे पहले तरबूज (बीज निकले हुए) को मिक्सी में पीस लें।अब इसे एक गिलास में छानकर नींबू के रस के साथ मिलाएं, फिर गिलास में थोड़ा काला नमक, बारीक कटी पुदीने की पत्तियां (वैकल्पिक) और शुगर सीरप (स्वादानुसार) मिलाएं।अंत में इसमें ठंडा पानी और चिया सीड्स डालें, फिर इस स्वादिष्ट पेय का आनंद लें।

तरबूज का फ्लेवर वॉटर

इसे बनाने के लिए सबसे पहले जार में तरबूज के छोटे-छोटे टुकड़े, थोड़ा सा नींबू का रस और तुलसी की ताजा पत्तियां डालें।अब इसमें ठंडा पानी और कुछ बर्फ के टुकड़े डालें। यकीनन यह आपको बहुत पसंद आएगा।आप चाहें तो ऐसे ही आइस्ड टी बना सकते हैं, बस इस मिश्रण में ग्रीन टी को बनाकर और ठंडा करके इसमें मिलाएं।यहां जानिए अन्य फ्लेवर वॉटर की रेसिपी। (आरएनएस)

विरासत से रुबरु होना

सुनील दीपक

17वीं से बीसवीं शताब्दी में यूरोप के कुछ देशों ने एशिया, अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका महाद्वीपों के विभिन्न देशों पर कब्ज़ा कर लिया। इन देशों की कला व सांस्कृतिक धरोहरों को उठाकर वे उन्हें अपने देशों में ले गये जहां इनके लिए संग्रहालय बनाये, जिनमें विभिन्न देशों से लायी वस्तुओं को अपने देशवासियों को दिखाया। इसके पीछे एक कारण यह दिखाना था कि देखो ये देश कितने पिछड़े और संस्कृतिविहीन थे।

समय के साथ, नये स्वतंत्र हुए विकासशील देशों ने धीरे-धीरे अपने संग्रहालय बनाने शुरू किये हैं। डिजिटल तकनीक के विकास ने संग्रहालयों को इंटरएक्टिव बना दिया जिससे दर्शकों को हर प्रदर्शित वस्तु के बारे में जानकारी पाने का एक नया माध्यम मिला। मुझे अपना राष्ट्रीय संग्रहालय बहुत अच्छा लगता है। मैंने यूरोप में कई संग्रहालय देखे हैं, मुझे यहां की प्रदर्शनी विदेशों के किसी भी संग्रहालय से कम नहीं लगती। दिल्ली में जब भी मौका मिलता है मैं राष्ट्रीय संग्रहालय में अवश्य एक चक्कर लगा लेता हूं। मेरे विचार में राष्ट्रीय संग्रहालय में इतिहास, संगीत, धर्म, संस्कृति आदि के गाइडिड टूर होने चाहिये ताकि लोगों को हमारे इतिहास के बारे में किताबी समझ के दायरे से बाहर का ज्ञान मिले।

दिल्ली के पास गुरुग्राम में, दिल्ली मेट्रो के अंजनगढ़ स्टेशन के पास आनन्दग्राम में एक सुन्दर संग्रहालय है, संस्कृति संग्रहालय। यह छोटा-सा है लेकिन यहां भारत के विभिन्न राज्यों से आयी जनजातियों द्वारा बनाई गयी मिट्टी की कला वस्तुओं का संग्रह मुझे बहुत अच्छा लगा। केरल में कोची का जनजाति संग्रहालय एक निजी संग्रहालय है जो केरल प्रदेश के वास्तुशिल्प, कला, सभ्यता व संस्कृति से परिचित कराता है।

नगालैंड की राजधानी कोहिमा से थोड़ी दूर किसामा सांस्कृतिक धरोहर गांव है जहां नगा जनजातियों के घरों, पोशाकों तथा कलाओं को दिखाया गया है। गुवाहाटी के छह मील क्षेत्र के पास पंजाबाड़ी में असमिया संगीतकार व कलाप्रेमी भूपेन हज़ारिका द्वारा स्थापित कला क्षेत्र संग्रहालय में असम की साहित्य, नृत्य, कला, नाटक तथा जनजातियों से जुड़ी परम्पराओं को प्रदर्शित किया गया है। मध्य प्रदेश की विभिन्न जनजातियों के आम जीवन की वस्तुएं, उनके घर, वस्त्र, रीतिरिवाज़, विभिन्न कलाओं आदि से जुड़ी इन संग्रहालयों में इतनी वस्तुएं हैं कि उनको देखने और समझने के लिए कई महीने चाहिये।

निराई-गुड़ाई से पोषण

अजय कुमार झा

आज हम बात करेंगे बागवानी की। पिताजी अक्सर कहा करते थे कि जिस तरह सुबह उठ कर फेफड़ों की सफाई के लिए श्वास नलिका और नासिका में अवरुद्ध पित्त.कफको साफ़रख कर हम नित्य उन्हें अवरोध मुक्त रखते हैंए इसी तरह से पौधों की जड़ों तक हवाए पानीए नमी और धूप के संतुलित आहार के लिए पौधों का निराई-गुड़ाई बहुत जरूरी है।

मैंने देखा है कि अधिकांश मित्र अक्सर जाने-अनजाने पौधे के ऊपरी हिस्से पर बहुत अधिक श्रम और ध्यान देते हैं मगर जड़ों की तरफउदासीनता बनी रह जाती है। यदि मैं पूछूं कि आप अपने पौधों की जड़ों की मिट्टी को कितनी बार हाथ से छू कर देखते हैं मौसम के अनुसार क्या आपको उनमें बदलाव महसूस होता हैए क्या आपने सुनिश्चित किया है कि गमले में जितना पानी आप दे रहे हैंए उसकी नमी उस गमले की सबसे नीचे की आखिरी जड़ों और रेशों तक पहुंच रही हैघ् जड़ों में अक्सर लग जाने वाली चींटियों और अनेक तरह के कीटों का सबसे सटीक उपाय और इलाज निराई-गुड़ाई है। निराई-गुड़ाई जितनी जरूरी नन्हे पौधों के लिए होती हैए उतनी ही बड़े वृक्षों विशेषकर फल देने वालों के लिए भी होती है। आमए लीचीए केले के बागानों में अक्सर जड़ों की निराई-गुड़ाई और जड़ों की मिट्टी दुरुस्त किए जाने का काम होता है।

खीरेए कद्दूए लौकी आदि तमाम बेलों की जड़ों पर अच्छी तरह से मिट्टी चढ़ाते रहने का काम जरूरी होता है अन्यथा जड़ें कमज़ोर पड़ जाएंगी और पौधा पनप नहीं पाएगा। धनियाए पुदीनाए पालक आदि साग पात में निराई-गुड़ाई की गुंजाइश सिर्फक्यारियों में ही उचित होती हैए गमलों में नहीं। अमरूदए आंवला की जड़ें रेशेदार होती हैंए इसलिए खुरपी चलाते समय ये डर न हो कि मिट्टी ऊपर.नीचे करते समय रेशे कट रहे हैं। थोड़े दिनों में वे अपने आप अपनी जगह पकड़ लेते हैं। खाद डालने से पहले निराई-गुड़ाई लाभदायक होती है। बरसातों में यथासंभव निराई-गुड़ाई नहीं की जानी चाहिए। निराई-गुड़ाई इस तरह से बिल्कुल न करें कि जड़ों में अपना घर बनाए केंचुए और जोंक सरीखे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाने वाले जीव जंतु परेशान हों।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

कपड़े धोने से जुड़ी कुछ सामान्य समस्याएं और उन्हें दूर करने के तरीके

कपड़े धोना एक सामान्य काम है, लेकिन कपड़े धोते समय लगभग हर किसी को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैस कभी नए कपड़े का रंग निकल जाता है तो कभी एक कपड़े का रंग दूसरे पर चढ़ जाता है आदि। हो सकता है कि आपके साथ भी कभी न कभी ऐसा हुआ हो। इसलिए आज हम आपको कपड़े धोने से जुड़ी ऐसी ही कुछ सामान्य समस्याओं और उन्हें दूर करने के तरीके बताने जा रहे हैं।

कपड़ों का सिकुड़ना

अगर आपको मशीन में किसी कपड़े को धोने के बाद उसका साइज कम नजर आता है तो समझ जाइए कि वो कपड़ा सिकुड़ गया है। ऐसा बहुत अधिक गर्म पानी में कपड़े को धोने या फिर कपड़े को अधिक ड्रायर के कारण होता है। इसलिए आप किसी भी कपड़े को धोते समय गर्म पानी और अधिक ड्रायर का इस्तेमाल न करें। बेहतर होगा कि आप किसी भी नए कपड़े को धोने से पहले उस पर लगे लेबल को पढ़ लें।

कपड़ों से रंग का निकलना

कई बार ऐसा होता है कि कपड़ों को मशीन में धोते समय उसमें से रंग निकल जाता है और अन्य कपड़ों पर भी लग जाता है। आमतौर पर यह समस्या अधिकतर नए कपड़ों के साथ देखी जाती है। इसलिए यह सलाह दी जाती है कि जब भी आप किसी नए कपड़े को पहली बार धोएं तो उसे सीधे मशीन में धोने की बजाय अलग से हाथों से धोएं। वहीं, कपड़ों को धोते समय उस पर लगे लेबल को जरूर पढ़ें।

धोते समय कपड़ों पर दाग लगना

कई बार ऐसा भी होता है कि कपड़ों को धोते समय उन पर दाग लग जाते हैं और इसका कारण है कपड़ों की जेब में कुछ न कुछ होना। इसलिए बेहतर होगा कि जब भी आप कपड़ों को मशीन में डालने लगे तो उससे पहले जेब को अच्छी तरह चेक करें। अगर संभव हो तो कपड़ों को उल्टा करके धोएं। ऐसा करने से कपड़ों को धोते समय उन पर किसी तरह का दाग नहीं लगेगा।

कपड़ों का फेड होना

आमतौर पर गलत तरीके से कपड़ों को सुखाने के कारण उनका रंग फेड हो जाता है। दरअसल, कई लोग नमी और बैक्टीरिया से छुटकारा पाने के लिए आमतौर पर कपड़ों को तेज धूप में सुखा देते हैं, लेकिन सीधे सूर्य की रोशनी के संपर्क में आने से कपड़ों का रंग फेड हो जाता है। इसलिए बेहतर होगा कि आप अपने धोए हुए कपड़ों को हल्की धूप या फिर हवा में कुछ समय के लिए ही सुखाएं।

रनिंग शूज खरीदते समय इन बातों का रखें खास ध्यान

अगर रोजाना कुछ मिनट रनिंग की जाए तो इससे शरीर को स्वस्थ और फिट रखने में काफी मदद मिलती है। दौड़ के लिए रनिंग शूज सबसे ज्यादा जरूरी होते हैं क्योंकिअगरयेसही होंगेतभी आप रोजाना आसानी से और अच्छे से दौड़ सकेंगे। अपने लिए रनिंग शूज खरीदते वक्त आपको कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। आइए आज ऐसी ही कुछ बातों के बारे में जानते हैं।

रनिंग शूज खरीदने से पहले अपनी जरूरत को समझने से हमारा मतलब यह है कि आप अपने दौड़ने की जगह और समय को ध्यान में रखें। उदाहरण के लिए, अगर आप खाली मैदान में दौड़ते हैं तो जूते उसी हिसाब से होने चाहिए, लेकिन बात ट्रेडमिल पर दौड़ने की है तो इसके लिए मार्केट में अलग रनिंग शूज उपलब्ध हैं। इसी तरह अगर आप ज्यादा दौड़ने के लिए जूते खरीद रहे हैं तो अपने कंफर्ट को ध्यान में रखें।

रनिंग शूज खरीदते समय उनकी सोल का ध्यान रखना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि अगर आपके जूतों के अंदर की सोल मुलायम नहीं होगी तो उन्हें पहनकर दौड़ने से आपके पैरों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसी के साथ गलत सोल के रनिंग शूज को पहनने से पीठ भी प्रभावित होने लगती है। इसलिए दौड़ के लिए मुलायम सोल वाले जूते ही खरीदें ताकि आप बिना किसी दिक्कत के अपनी रोजाना की दौड़ को पूरा कर सकें।

दौड़ के लिए जूते खरीदते समय वजन को ध्यान में रखना भी मायने रखता है, फिर चाहे वह आपका वजन हो या जूतों का। सबसे अधिक ध्यान देने वाली बात यह है कि हल्के वजन वाले जूते हमेशा बेहतर होते हैं क्योंकि ये दौड़ने से लेकर सैर करने तक के लिए लाभदायक होते हैं। इसके अलावा आप जितना तेज दौड़ते हैं, उतने ही हल्के वजन के जूते खरीदें।

शब्द सामर्थ्य - 84

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. रूचिकर लगने वाली, रूचि के अनुकुल, चुनी हुई 3. राजाओं के बैठने का आसन 6. श्रमिक 7. कार्य, काज 9. वाद्ययंत्र आदि बजाने वाला 10. सहारा, सहायक वस्तु 11. शर्म, लाज, हया 12. मक्खन, माखन 14. श्रीमती राबड़ी देवी इस प्रदेश की मुख्यमंत्री हैं 15. चंद्रमा, रजनीश, चांद 18. पुस्तक 20. अवधि, समय 21. तर्क वितर्क और कहा-सुनी, जबानी झगड़ा 22. सूरत, आकार 23. झुका हुआ, नत।

ऊपर से नीचे

1. पंद्रह दिन का समय, शुक्ल या कृष्ण पक्ष 2. आग बुझाने की मशीन 3. हिंदु विवाहित स्त्री के मांग में भरने का लाल चूर्ण 4. पराजय, माला 5. मुंह ढकने का कपड़ा, घुंघट 8. चंदन, दक्षिण का एक पर्वत 10. व्यवस्थित करना, सजाना, स्वभाव आदि का परिष्कार, शुद्ध संबंधी कृत्य 12. विशालता, बड़प्पन, महान होने का भाव 13. अड़चन, रुकावट 15. जमीन के अंदर गहरा और लंबा रास्ता, अच्छे रंग का 16. बेवकूफ, मूर्ख, अहमक 17. औसत के हिसाब से 18. कृषक 19. अधिक, ज्यादा।

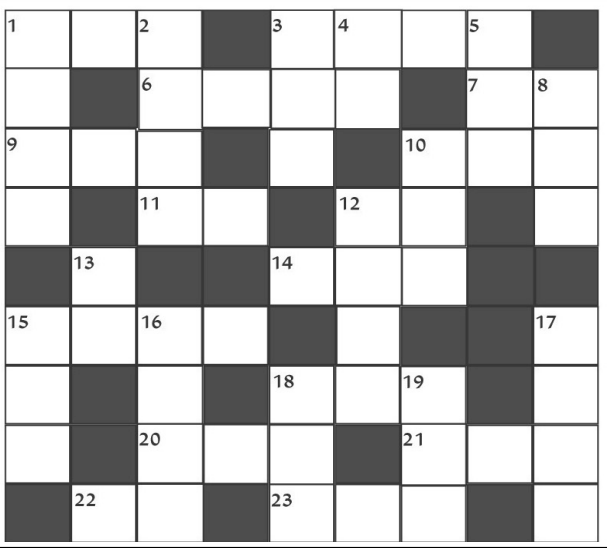

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 83 का हल

ज	ल	■	आ	वा	जा	ही	■	■
मा	■	खू	ब	■	दू	र	स्थ	■
ना	दा	न	■	सा	ग	■	ल	क्ष्य
■	न	ख	■	त	र	ल	■	■
■	वी	रा	न	■	■	च	ट	क
■	र	ब	■	आ	ज	क	ल	■
■	■	■	आ	ग	■	दा	ना	■
■	अ	ग	र	म	ग	र	■	क्रो
भा	भी	■	ती	न	■	■	व	ध

तमन्ना भाटिया का बॉक्स ऑफिस पर तहलका, 30 करोड़ के करीब पहुंची अरनमनई 4

तमिल फिल्म अरनमनई 4 दर्शकों को काफी पसंद आ रही है. 3 मई, 2024 को सिनेमाघरों में दस्तक देने वाली ये फिल्म फैंस का दिल जीतने में कामयाब रही है. अरनमनई 4 को रिलीज हुए अभी कुछ दिन ही हुए हैं और फिल्म कलेक्शन के मामले में घरेलू बॉक्स ऑफिस पर 30 करोड़ के करीब पहुंच गई है. सैकनिल्क की रिपोर्ट की मानें तो अरनमनई 4 ने पहले दिन 4.65 करोड़ रुपए की दमदार ओपनिंग की थी. दूसरे दिन तमन्ना भाटिया स्टारर फिल्म की कमाई बढ़ी और इसने 6.65 करोड़ रुपए का कारोबार किया और तीसरे दिन 7.85 करोड़ रुपए छापे. चौथे दिन अरनमनई 4 ने 3.65 करोड़ रुपए कमाए और पांचवें दिन 3.4 करोड़ रुपए का बिजनेस किया. अरनमनई 4 ने छठे दिन भी घरेलू बॉक्स ऑफिस पर 3 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया है और इसी के साथ फिल्म का कुल कलेक्शन 29.20 करोड़ रुपए हो गया है. अपने 6 दिनों के कारोबार के साथ अरनमनई 4 अब अपना बजट निकालने के बहुत करीब पहुंच गई है. बता दें कि मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक तमन्ना भाटिया की फिल्म का बजट 40 करोड़ रुपए बताया जा रहा है. अरनमनई 4 में तमन्ना भाटिया के साथ राशी खन्ना भी लीड रोल में हैं. तमन्ना के वर्कफ्रंट की बात करें तो वे तमन्ना भाटिया स्टारर इस फिल्म में राशि खन्ना भी अहम रोल में हैं. तमन्ना के वर्कफ्रंट की बात करें तो एक्ट्रेस के पास तेलुगु फिल्म ओडेला 2 है जिसमें वे शिवशक्ति के रोल में नजर आएंगी. तमन्ना निखिल आडवाणी की डायरेक्टोरियल फिल्म वेदा में भी दिखाई देंगी. इसके अलावा तमन्ना भाटिया के पास दो वेब सीरीज भी पाइपलाइन में है. वे डेयरिंग पार्टनर्स और नीरज पांडे की एक अनटाइटल्ड ओटीटी फिल्म में दिखाई देंगी.

फिल्म सवी- ए ब्लडी हाउसवाइफ का नया टीजर जारी, दिव्या खोसला कुमार का दिखा खूंखार रूप

अनिल कपूर और दिव्या खोसला कुमार की आगामी फिल्म सवी- ए ब्लडी हाउसवाइफ का दर्शक बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।यह फिल्म 31 मई, 2024 को सिनेमाघरों में दस्तक देने को तैयार है।इससे पहले निर्माताओं ने बीते दिन सवी- ए ब्लडी हाउसवाइफ का पहला टीजर जारी किया गया था, जिसमें दिव्या का दमदार अवतार देखने को मिला।अब फिल्म का दूसरा टीजर सामने आ चुका है, जिसमें दिव्या बड़ी साजिश को अंजाम देती नजर आ रही हैं। टीजर में दिव्या को यह कबूल करते हुए दिखाया गया है कि उनके पास 3 दिन के बाद लंदन में जेल ब्रेक की साजिश रचने और उसे अंजाम देने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।वे एक साधारण गृहणी हैं, लेकिन आखिरकार उन्होंने अपने हाथों को खून से क्यों रंगा है? यह तो फिल्म रिलीज होने के बाद ही पता चलेगा।फिल्म के निर्देशक की कमान अभिनय देव ने संभाली है। हर्षवर्धन राणे भी इस फिल्म अहम हिस्सा हैं। फिल्म में दिव्या खोसला के साथ अनिल कपूर और हर्षवर्धन राणे भी मुख्य भूमिकाओं में हैं। फिल्म की पूरी शूटिंग लंदन में की गई है। किरदार देव की फिल्म सावी का निर्माण विशेष मनोरंजन और टी-सीरीज के बैनर मुकेश भट्ट, भूषण कुमार और कृष्ण कुमार ने किया है। शिव चाना और साक्षी भट्ट सह-निर्माता के रूप में शामिल हैं। यह फिल्म एक बेहतरीन एक्शन एक्शन से भरपूर है। हालांकि, यह देखने के लिए कि एक साधारण गृहिणी के जेल से पीछे की कहानी क्या है और वह इसे कैसे प्रदर्शित करती है, इसके लिए फिल्म के रिलीज होने तक का इंतजार करना होगा। यह फिल्म 31 मई, 2024 को रिलीज होगी।

चियान विक्रम के बेटे ध्रुव की नई फिल्म का ऐलान, सामने आया बायसन का धांसू पोस्टर

साउथ सुपरस्टार चियान विक्रम की मोस्ट अवेटेड फिल्म थांगलान की रिलीज से पहले एक्टर के फैंस को बड़ा तोहफ मिला है. विक्रम के बेटे ध्रुव विक्रम की नई फिल्म का एलान हुआ है. इससे पहले फिल्म से दो पोस्टर सामने आए थे, जिन्होंने विक्रम के फैंस की बैचेनी बढ़ा दी थी. अब इन पोस्टर्स पर्दा हट चुका है और फिल्म के नाम का खुलासा हो चुका है. फिल्म का नाम बायसन है और फिल्म से एक पोस्टर भी जारी हुआ है. इस पोस्टर में ध्रुव अपने घुटने को बल सिर नीचे करे बैठे हैं और उनके पीछे एक जंगली बैल का बड़ा सा स्टैच्यू है. इस फिल्म को मारी सेल्वाराज डायरेक्ट करने जा रहे हैं. ध्रुव ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट शेयर कर लिखा है, बायसन, उन सभी के लिए जो मेरे इंतजार में थे, इस निरंतर सपोर्ट और धैर्य के लिए धन्यवाद, अपनी तीसरी फिल्म और विजनरी डायरेक्टर मारी सेल्वाराज के साथ नई फिल्म की शूटिंग शुरू कर मैं बहुत उत्साहित हूं, बायसन की आज से शूटिंग शुरू. बता दें, ध्रुव ने साल 2019 में फिल्म आदित्य वर्मा से फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखा था. इसके बाद वह वर्मा (2020) में दिखे. फिल्म स्टार फादर विक्रम की फिल्म महान (2022) में नजर आए. अब वह बतौर एक्टर अपनी नई फिल्म बायसन (2024) में नजर आने वाले हैं. बता दें, विक्रम अपनी तमिल फिल्म थंगलान से लंबे समय से चर्चा में हैं. इस फिल्म की शूटिंग लंबे अरसे से चल रही है और फिल्म की कई बार रिलीज डेट टल चुकी है और अभी तक फिल्म की अगली डेट का एलान नहीं किया गया है. फिल्म की कहानी भारत में ब्रिटिशर्स के दौरान कोलर गोल्ड फील्ड में होने वाली काम पर बेस्ड है. फिल्म में विक्रम लीड रोल में हैं और उनके साथ एक्ट्रेस पार्वती और मालविका मोहनन दिखेंगी.

निखिल सिद्धार्थ की पैन-इंडिया फिल्म स्वयंभू का नया पोस्टर हुआ रिलीज

टीम स्वयंभू ने निखिल सिद्धार्थ अभिनीत फिल्म का नया पोस्टर जारी कर दिया है. फिल्म में साम्युखता मेनन और नाभा नातेश भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं. यह फिल्म टैगोर मधु की प्रस्तुति है, जिसका निर्देशन भारत कृष्णमचारी ने किया है. रवि बसरूर ने फिल्म का संगीत दिया है, और भुवन और श्रीकर ने इसे प्रोड्यूस किया है. फिल्म तेलुगु, हिंदी, तमिल, कन्नड़ और मलयालम भाषाओं में रिलीज होगी. हालांकि फ़िल्म कब रिलीज होगी इसके बारे में अभी कोई जानकारी शेयर नहीं की गई है.

पोस्टर में निखिल सिद्धार्थ को एक योद्धा के रूप में दिखाया गया है, जो रणभूमि में खड़े हैं. उनके सामने हजारों की जनसंख्या नजर आ रही है. स्वयंभू एक एक्शन ड्रामा फिल्म है, जो एक युवक की कहानी है जो अपने जीवन के लिए संघर्ष करता है. फिल्म में निखिल सिद्धार्थ एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभा रहे हैं, जो अपनी पहचान और अपने परिवार के सम्मान के लिए लड़ता है.

ताजा अपडेट के मुताबिक मौजूदा समय में फिल्म की टीम एक प्रमुख एक्शन सीक्वेंस का फिल्मांकन कर रही है, जिसमें प्रमुख कलाकार शामिल हैं। इन दृश्यों में निखिल कुछ हैरतअंगेज स्टंट करते भी नजर आएंगे, जिसे वियतनामी लड़ाकों समेत 700 कलाकारों के साथ 12 दिनों तक शूट किया जाएगा।

रिपोर्ट्स के मुताबिक वॉर सीक्वेंस को दो बड़े सेट पर शूट किया जाएगा। जानकारी के मुताबिक इस सीक्वेंस की शूटिंग में निर्माता पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं। बताया जा रहा है कि इसे शूट करने में मेकर्स के आठ करोड़ रुपये खर्च होंगे। इन एक्शन दृश्यों में आने वाली लागत की वजह से यह फिल्म चर्चा के केंद्र में आ गई है। इस पीरियड एक्शन-एडवेंचर ड्रामा में संयुक्ता और नाभा नटेश महत्वपूर्ण भूमिकाओं में नजर आएंगे। फिल्म का निर्माण भुवन और श्रीकर कर रहे हैं। वहीं, इसे टैगोर मधु द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा। फिल्म के छायांकन की कमान मनोज परमहंस के हाथों में है। वहीं, इसका संगीत रवि बसरुर ने तैयार किया है। इसके संवाद वासुदेव मुनेप्पगारी ने लिखे हैं। जबकि एम प्रभाकरन ने फिल्म का सेट डिजाइन किया है।

मनोज बाजपेयी की फिल्म भैय्या जी का दमदार टीजर हुआ रिलीज, फिल्म 24 मई को सिनेमाघरों में देगी दस्तक

मनोज बाजपेयी फिल्म इंडस्ट्री के टैलेंटेड एक्टर्स में से एक हैं। उन्होंने अपने करियर में एक से बढक़र एक फिल्में और वेब सीरीज की हैं। अब उनकी नई फिल्म भईया जी का टीजर रिलीज किया गया है जिसमें वो बदले की आग में जलते नजर आ रहे हैं। मनोज बाजपेयी का फिल्म में काफी खूंखार किरदार दिखाया जाएगा जिसे आप इस टीजर में देख सकते हैं।

पहले भी मनोज बाजपेयी ने सस्पेंस और एक्शन सीन वाली फिल्में की हैं लेकिन इस बार उनके अभिनय में कुछ अलग देखने को मिलेगा। फिल्म का टीजर काफी पसंद किया जा रहा है और मेकर्स ने टीजर के साथ फिल्म की रिलीज डेट भी बताई है।

पहले भी मनोज बाजपेयी ने सस्पेंस और एक्शन सीन वाली फिल्में की हैं लेकिन इस बार उनके अभिनय में कुछ अलग देखने को मिलेगा। फिल्म का टीजर काफी पसंद किया जा रहा है और मेकर्स ने टीजर के साथ फिल्म की रिलीज डेट भी बताई है।

फिल्म के टीजर में दिखाया है कि एक सीधा-सादा इंसान अपने भाई की पढ़ाने के लिए सबकुछ करता है। लेकिन जब उसका भाई किसी साजिश का शिकार होकर मार दिया जाता है तब बदले की आग जल उठती है। टीजर देखकर फिल्म की कहानी तो कुछ ऐसी ही नजर आ रही, बाकी 24 मई को क्लियर होगा कि फिल्म की कहानी आखिर किस आधार पर होगी।

मनोज बाजपेयी का ऐसा खूंखार रूप आपने शायद ही किसी फिल्म में देखा हो। फिल्म भईया जी का निर्देशन अपूर्व सिंह कार्की ने किया है। वहीं फिल्म में मनोज बाजपेयी ही लीड एक्टर के तौर पर नजर आए हैं। बता दें, मनोज बाजपेयी ने फिल्म द्रोह काल (1994) से अपने बॉलीवुड करियर की शुरुआत की थी। इंडस्ट्री में उन्हें लगभग 20 साल हो चुके हैं और फिल्म भईया जी उनकी 100वीं फिल्म है।

फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही का पहला पोस्टर रिलीज

जान्हवी कपूर और राजकुमार राव अभिनीत फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही बीते लंबे समय से अपनी रिलीज को लेकर चर्चाओं में है। शरण शर्मा द्वारा निर्देशित यह फिल्म पूर्व भारतीय क्रिकेट कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के जीवन पर आधारित एक स्पोर्ट्स ड्रामा है। वहीं, अब फिल्म के कुछ और पोस्टर्स जारी किए गए हैं, जो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

राजकुमार राव इन दिनों अपनी दो फिल्मों को लेकर सुर्खियां बटोर रहे हैं। अभिनेता की फिल्म श्रीकांत भी जल्द सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही हैं। वहीं, दूसरी ओर वह जान्हवी कपूर के साथ मिस्टर एंड मिसेज माही में भी नजर आने वाले हैं। अब हाल ही में, मेकर्स ने फिल्म के कुछ नए पोस्टर्स भी जारी किए हैं, जिसमें दोनों कलाकार स्टेडियम में चीयर करते हुए नजर आ रहे हैं। फैंस को फिल्म का पोस्टर काफी पसंद आ रहा है।

मालूम हो कि फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही की घोषणा निर्माता करण जौहर ने नवंबर 2021 में की थी, और मई 2022 में इसकी शूटिंग शुरू हुई। यह फिल्म 2021 की हॉरर थ्रिलर रूही के बाद जान्हवी और राजकुमार के दूसरे सहयोग का प्रतीक है। फिल्म में अभिषेक बनर्जी, राजेश शर्मा, कुमुद मिश्रा, जरीना वहाब और पूर्णेंदु भट्टाचार्य भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। फिल्म की शूटिंग 1 मई को पूरी हो गई थी।

बता दें कि फिल्म 31 मई 2024 को सिनेमाघरों में आने वाली है। पहले इसे 19 अप्रैल को रिलीज किया जाना था, लेकिन अब मेकर्स ने इसकी डेट आगे बढ़ा दी गई है। फैंस भी एक बार फिर स्क्रीन पर फ्रेश जोड़ी देखने के लिए बेताब हैं। वहीं, क्रिकेट प्रेमी दर्शक भी इस फिल्म का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। फिल्म की कहानी की बात करें तो यह टीम इंडिया के पूर्व विश्व कप विजेता कप्तान और थाला महेंद्र सिंह धोनी के आधारित है।

सहजता के जीवन में ही सुख की राह

अमिताभ स.

जाने-माने उद्योगपति रतन टाटा अमूमन एक कहानी सुनाते हैं, 'एक व्यक्ति तोता ख़रीदने गया। पिंजरों में बंद कई तोते थे। उसने एक तोते की कीमत पूछी, तो तोते वाले ने बताया, 'पांच हजार रुपये।' व्यक्ति ने पूछा, 'इतना महंगा? यह करता क्या है?' तोते वाले ने जवाब दिया कि यह अपनी चोंच से अंग्रेज़ी टाइप कर सकता है। खैर, व्यक्ति ने दूसरे तोते की कीमत जाननी चाही। तोते वाले ने कहा, 'यह तो दस हज़ार रुपये का है। क्योंकि यह तीन भाषाएं बोल-समझ सकता है। ' हैरान व्यक्ति बोला, 'मुझे इतना काम करने वाले तोते नहीं चाहिए। उस आखिरी तोते की कीमत बताइए?' तोते वाला कहने लगा, 'वह तो तीस हज़ार रुपये का है।' उसने पूछा, 'यह करता क्या है?' तोते वाला बोला, 'मैं नहीं जानता, लेकिन सभी इसे चेयरमैन कहते हैं।' रतन टाटा आगे कहते हैं, 'मैं खुद जानता हूं कि चेयरमैन कुछ नहीं करता, फिर भी, बिग बॉस वही होता है।'

गुलाब और कमल के फूल के बीच कोई मुक़ाबला नहीं है। क्योंकि हर फूल की अपनी सिफत और खूबसूरती होती है। इसी प्रकार जिंदगी के सफ़र में भी कोई किसी से आगे या पीछे नहीं है, और न ही कोई किसी से बेहतर है या कमतर। हर इनसान वहीं है, जहां उसे होना चाहिए। हर इनसान अपना अध्यापक है और अपना विद्यार्थी भी। बावजूद इसके आत्मग्लानि से ग्रसित रहता है- कुछ न करने की, तो कभी कुछ करने की। बेतहाशा खर्च किया, या फिर, समय का पाबंद न हुआ तो आत्मग्लानि। किसी से नफ़रत करने पर आत्मग्लानि, तो किसी से प्यार करने पर भी। कभी-कभार तो ग्लानि पर ग्लानि होने लगती है। ग्लानि का अर्थ है- मन में किसी कार्य को करने का खेद होना। या कहें, अपनी गलती को महसूस करते हुए मन ही मन शिथिलता और खिन्नता पैदा होना। हरदम दूसरों को खुश करने, अच्छा बनने की और अपना सब कुछ कायदे से रखने जैसी कोशिशें बीमार तक बना देती हैं। इनसान 'मैं ऐसा क्यों हूं' या 'मैं वैसा क्यों हूं' के चक्कर में परेशान हो उठता है।

वास्तव में, इनसान ऐसे लोगों से घिरा रहता है, जो दूसरों को नियंत्रित करते हैं, उनका मूल्यांकन करते हैं और निरंतर आत्मग्लानि का आभास कराते रहते हैं। जबकि ऐसे लोग दूसरों को बदलने के तो उतारू होते हैं, लेकिन खुद को न बदल सकते हैं, न बदलने की हिम्मत जुटा पाते हैं। सद्गुरु जग्गी वासुदेव समझाते हैं, 'संपूर्ण होने के लिए आपको कुछ करने की जरूरत नहीं है, आपको कुछ सोचने की जरूरत नहीं है, आपको अनुभव करने की ज़रूरत नहीं है। जैसे आप हैं, आप एक सम्पूर्ण जीवन हैं।'

अमूमन, दफ्तर की मेज़ पर काग़ज़ों-फ़ाइलों का अम्बार और घर की अलमारी से बाहर गिरते कपड़े देखने-सुनने में सही नहीं लगते, व्यक्तित्व की छवि को गिराते हैं। लेकिन शोध जताते हैं कि इस लिहाज से लापरवाह लोग खुशमिज़ाज होते हैं।

न्यूयार्क की 'एजिलोन प्रोफेशनल स्टाफिंग' के सर्वे के मुताबिक साफ-सुथरी डेस्क के मुक़ाबले अव्यवस्थित मेज के प्रोफेशनल्स ज़्यादा मोटा वेतन पाते हैं। न्यूयार्क की 'सीकोस्ट मेंटल हेल्थ सेंटर' के मनोवैज्ञानिकों की राय है कि घर या दफ्तर या ज़िंदगी में पूरी तरह अव्यवस्था का सफाया करना मुमकिन नहीं है। इर्विन कुला अपनी किताब 'एम्बेरेसिंग द स्केयरड मेसीनेस ऑफ लाइफ' में इस हद तक लिखती हैं, 'सलीके और तरकीब से रहने का मतलब है कि आपने कुछ किया ही नहीं। मिसाल के तौर पर, आड़े-तिरछे बिखरे औज़ार ही बताते हैं कि मिस्त्री काम कर रहा है। और अगर रसोई सलीक़े से सजी है तो यकीनन खाना बनाया और परोसा ही नहीं गया। ' तथ्य है कि महान ब्रिटिश वैज्ञानिक अलेग्जेंडर फ्लेमिंग ने अपने लापरवाह रवैये के चलते ही क्रान्तिकारी दवा पेंसलीन का आविष्कार किया था। उनकी प्रयोगशाला अव्यवस्थित रहती थी। उन्होंने तश्तरी में कुछ रासायनिक यूं ही छोड़ दिए, जिससे वहां मौजूद बैक्टिरिया समाप्त हो गए। इसी से आगे पेंसलीन की राह खुल गई।

अमेरिकी संगीतकार कर्ट कोबेन का मानना है, 'किसी और जैसा बनने की इच्छा, दरअसल खुद के व्यक्तित्व को व्यर्थ जाने देना है। ' लोगबाग दूसरों पर दबदबा जमाने के लिए आत्मग्लानि का एहसास जगाने से बाज नहीं आते। साथ ही, अपनी कमज़ोरियों पर पर्दा डालने का प्रयास करते नहीं थकते। दिमाग़ी सोच है, जिसमें खासी ऊर्जा खपती है। इसके नकारात्मक प्रभाव को जानने के बाद बचना अत्यंत ज़रूरी हो जाता है। और अगर कोई हमेशा स्वयं की दूसरों से तुलना करे, तो वह स्वयं ही अहंकार या ईर्ष्या का शिकार हो जाएगा। बात-बेबात पर खुद को कोसना छोड़ दीजिए। अपनी सीमाओं में रह कर, बेफ़िक्री से सारे काम कीजिए, जो दूसरों को ठेस न पहुंचाएं।

हर इनसान के लिए चित्त की आजादी, नैतिक आचरण और सदाचार का सिद्धांत अलग-अलग हो सकता है। यानी हर इनसान को अपने देश, धर्म और परिवार के मद्देनज़र एक लक्ष्मण रेखा खींचनी होगी। तभी पूर्ण सदाचार के नियम-क़ायदे तय होंगे। इस रेखा से परे हर इनसान को आज़ादी है, मनमर्ज़ी करने की छूट है। सयाने कहते हैं कि खुद को न दोष देना चाहिए, न ही तारीफ़ करनी चाहिए। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति और विचारक अब्राहम लिंकन काम करने की अपनी धीमी रफ्तार पर यूं तसल्ली देते हैं, 'मैं धीमा चलता हूं तो क्या, पर कभी वापस नहीं आता।'

दरअसल हर किसी की काम करने की अपनी गति होती है। अगर आपको किसी काम में दूसरों से अधिक समय लग रहा है, तो इसका मतलब यह नहीं कि आप पीछे हैं। विद्यार्थी की तरह सीखते हुए आगे बढ़ेंगे, तो खुद दुरुस्त होते जाएंगे, सुधार निरंतर जारी रहेगा। ओशो इस प्रवृत्ति को दुःख-सुख से जोड़ते हैं, कहते हैं, 'तुम्हारा दुःख अत्यन्त गम्भीरता की वजह से है। गम्भीर चित्त से तुम सुखी हो ही नहीं सकते। जिंदगी को एक नाटक या कहानी की तरह लो। उत्सव मनाने वाला चित्त ही सुखी करता है।' जगज़ाहिर है कि बेपरवाह होकर, खींची गई तस्वीर हमेशा अधिक सहज आती है।

बॉक्स ऑफिस पर आखिरी दिन गिन रही बड़े मियां छोटे मियां

अक्षय कुमार, टाइगर श्रॉफ और पृथ्वीराज सुकुमारन जैसे सितारों से सजी फिल्म बड़े मियां छोटे मियां की कमाई रिलीज के चौथे सप्ताह में भी जारी है।बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म का सामना अजय देवगन की फिल्म मैदान से हो रहा है।यह दोनों फिल्में ईद के मौके पर सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। हालांकि, यह बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाल नहीं दिखा सकी।आइए जानते हैं 28वें दिन मैदान और बीएमसीएम के खाते में कितने लाख रुपये कमाए। बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, बड़े मियां छोटे मियां ने अपनी रिलीज के 28वें दिन यानी चौथे बुधवार को 25 लाख रुपये का कारोबार किया, जिसके बाद इसका कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 64.5० करोड़ रुपये हो गया है।इस फिल्म का निर्देशन अली अब्बास जफर ने किया है।मानुषी छिल्लर, सोनाक्षी सिन्हा और अलाया एफ जैसी अभिनेत्रियां भी इस फिल्म का अहम हिस्सा हैं।सिनेमाघरों के बाद यह फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर दस्तक दे सकती है। बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, 28वें दिन यानी चौथे बुधवार को मैदान ने 5० लाख रुपये का कारोबार किया, जिसके बाद इसका कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 49.85 करोड़ रुपये हो गया है।ऐसे में अब फिल्म को जल्द सिनेमाघरों से हटाया जा सकता है।मैदान की कहानी फुटबॉल कोच सैयद अब्दुल रहीम पर आधारित है, जिनके मार्गदर्शन में भारतीय फुटबॉल टीम ने 1951 और 1962 के एशियाई खेलों में जीत हासिल की थी।

सू- दोकू क्र. 84

	7			4		3		
2			3			9		4
	6			2				
3		1			7		4	
	2			1			6	
8			9		4			1
		2		3		7		
1			7		2	4		3
	5	3		8			7	2

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.83 का हल

9	2	8	3	1	5	7	4	6
4	1	6	8	9	7	2	5	3
7	3	5	4	6	2	8	1	9
2	7	3	9	8	1	4	6	5
5	4	1	6	7	3	9	2	8
6	8	9	2	5	4	1	3	7
3	6	2	7	4	9	5	8	1
8	5	7	1	2	6	3	9	4
1	9	4	5	3	8	6	7	2

नैतिक मूल्यों का अतिक्रमण रोकना जरूरी

दीपिका अरोड़ा

आधुनिक इंटरनेट सुविधा ने बहुपक्षीय प्रगति में भले ही नये आयाम स्थापित किए हों, किंतु इस सुविधा का ख़ासा दुरुपयोग भी चलन में आया है। जहां मनोरंजन क्षेत्र पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक एवं सर्वसुलभ बना, वहीं दूसरी ओर लोगों के रूझान में भारी परिवर्तन देखा जा रहा है। अश्लीलता के प्रति बढ़ती रुचि, पोर्नोग्राफी के रूप में समस्त सीमाओं का अतिक्रमण करने पर आमादा है।

विश्वभर में पोर्नोग्राफी उद्योग एक बड़े व्यवसाय का आकार ले चुका है। वैश्विक स्तर पर संचालित पोर्नोग्राफी उद्योग से होने वाला अनुमानित मुनाफ़ा 1०० बिलियन डॉलर से कहीं अधिक है। इस मामले में अमेरिका सबसे ऊपर है, व्यवसाय से प्राप्त लाभांश का लगभग 1० फीसदी यहीं से उपलब्ध होता है।

भारत की बात करें तो यहां पोर्नोग्राफी पूर्णतः प्रतिबंधित है। कानूनी तौर पर पोर्न फिल्में बनाना अथवा बेचना आईपीसी की धारा के तहत आपराधिक श्रेणी में आता है। हालांकि, व्यक्तिगत तौर पर अश्लील सामग्री देखना अपराध नहीं, किंतु किसी भी प्रकार की अश्लील सामग्री अन्यत्र प्रेषित करने, इलेक्ट्रोनिक ढंग अथवा किसी अन्य माध्यम द्वारा प्रकाशित-प्रसारित करने पर एंटी पोर्नोग्राफी लॉ लागू होता है। दरअसल, विचार निरन्तर प्रवाहित होने वाली प्रक्रिया है, जिनका निर्माण पूर्णतः मनन पर आधारित है। जो कुछ हम पढ़ते, देखते अथवा सुनते हैं वही मन-मस्तिष्क में संग्रहित होकर विचारों का रूप धारण करना आरम्भ कर देता है। पठन-पाठन, दृश्य-श्रव्य सामग्री के उच्च अथवा निम्न स्तर का व्यक्ति विशेष के विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। पोर्न सामग्री न केवल शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है बल्कि विद्रूप भावनाएं भड़काकर दुष्कर्म जैसे जघन्य अपराधों के लिए भी उकसाती है। विशेषज्ञों के मतानुसार, नित्य प्रति बढ़ रहे यौन अपराधों में पोर्न सामग्री की उपलब्धता एक मुख्य कारण है। वर्ष 2०18 में देहरादून दुष्कर्म मामले के आरोपी द्वारा उत्तराखंड हाईकोर्ट में, पोर्न फिल्म देखने के पश्चात ही आपराधिक कृत्य को अंजाम देने की बात स्वीकार की गई।

विषय की गंभीरता पर संज्ञान लेते हुए वर्ष 2०18 में भारत के दूरसंचार विभाग ने देश में इंटरनेट सेवा उपलब्ध करवाने वाले सभी सेवा प्रदाताओं को 827 पोर्न वेबसाइट ब्लॉक करने के आदेश जारी किए। बावजूद इसके, विश्व भर में अश्लील सामग्री देखने वालों की संख्या में यू. एस. तथा यू.के. के पश्चात भारत का तीसरा स्थान रहा। निश्चय ही, देश के लिए यह चिंता का विषय है कि दुनिया की सबसे बड़ी पोर्न वेबसाइट मानी जाने वाली 'पोर्नहब' के अनुसार भारत उसका सबसे बड़ा बाज़ार है। 2०18 की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में पोर्न साइट पर विज़िट करने वाला व्यक्ति औसतन 1० मिनट पंद्रह सेकंड का समय व्यतीत करता है। लॉकडाउन के दौरान, भारत में वर्ष 2०2० के अप्रैल माह में एडल्ट साइट्स पर किया जाने वाला सर्च बढ़कर 95 फीसदी हो गया।

सत्य तो यह है कि भारत में पोर्न उद्योग प्रतिबंधित होने पर भी बड़ी संख्या में चोरी-छिपे अश्लील फिल्में बनती हैं। मीडिया से प्राप्त जानकारी के अनुसार हाल ही में, कथित रूप से एक जाने-माने व्यवसायी द्वारा पोर्न फिल्में बनाकर 'हॉट शॉट' तथा 'हॉट हिट' एप्स के माध्यम से संचालित करने की की बात सामने आई। रिपोर्ट में 'हॉट शाट' एप पर उपलब्ध ग्राहक संख्या 2० लाख होने तथा लाइव शो के माध्यम से 1.85 लाख एवं फिल्मों के ज़रिए 4.53 लाख रुपये प्रतिदिन कमाने की बात भी कही गई। मुंबई के संयुक्त पुलिस आयुक्त मिलिंद भारंबे के अनुसार नवोदित अभिनेत्रियों को वेबसीरीज़ में प्रलोभन देकर ऑडिशन के लिए बुलाया जाता था। मामला अभी विचाराधीन है। बेशक, भौतिकतावादी होने में कोई बुराई नहीं बशर्ते व्यक्तिगत लाभ कमाने हेतु नैतिक व सामाजिक मूल्यों का अतिक्रमण न हो। समाज में अश्लीलता का प्रचार-प्रसार करना तथा निज स्वार्थसिद्धि हेतु किसी प्रकार का प्रलोभन देते हुए अन्य लोगों को अनैतिक कार्यों के लिए उकसाना कदापि स्वीकार्य नहीं। किसी भी स्तर पर होने वाली अनैतिकता समाज व देश को पतन की ओर ले जाती है, सम्पूर्ण मानवता को जिसका भारी मूल्य चुकाना पड़ता है। प्रलोभन का शिकार बनने वाले युवा वर्ग को भी यह समझना होगा कि देह-प्रदर्शन सफलता की गारंटी नहीं।

इस बार देश में इंडिया गठबंधन की सरकार बनेगीः बेहड

कार्यालय संवाददाता

गुड़गांव। लोकसभा चुनाव में पांचवें चरण का मतदान 20 मई को होना है , जिसमें देश भर की 49 लोकसभा सीटों पर मतदान होगा । ऐसे में तमाम प्रत्याशी और उनके समर्थक चुनाव प्रचार में पूरी ताकत झोंक रहे हैं। गत दिवस गुड़गांव लोकसभा सीट के बादशाहपुर में कांग्रेस के प्रत्याशी राज बब्बर की पुत्री जूही बब्बर और युवा कांग्रेसी नेता सौरव राज बेहड ने जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि इस बार देश में इंडिया गठबंधन की सरकार बनेगी, क्योंकि देश की जनता भाजपा के जुमले से तंग आ चुकी है।

उन्होंने कहा कि भाजपा ने सिर्फ धर्म के आधार पर राजनीति की है ।ऐसे में देश की जनता परिवर्तन चाहती है। युवा कांग्रेसी नेता बेहड ने कहा कि पिछले 10 वर्षों में भाजपा सरकार में महंगाई बेरोजगारी चरम पर पहुंच गई है ,युवा दर-दर की ठोकरे खा रहे हैं लेकिन भाजपा सरकार ने देश के युवाओं के लिए कुछ नहीं किया और अब देश का युवा देश में बदलाव चाहता है।

उन्होंने जूही बब्बर के साथ बादशाहपुर के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी जनसभाएं की तथा डोर टू रोड जाकर मतदाताओं से संपर्क किया। उन्होंने कहा गुड़गांव में लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी राज बब्बर ऐतिहासिक जीत हासिल करेंगे।

नशे में धुत्त युवक ने किया जानलेवा हमला, मुकदमा दर्ज

संवाददाता

देहरादून। नशे में धुत्त युवक ने दूसरे युवक पर जानलेवा हमला किया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार ईदगाह प्रकाश नगर निवासी शिवचन्द्र सहानी ने कैण्ट कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसका बेटा राधे श्याम अपने दोस्तो राजेश पुत्र चुसाई साहनी एंव दीपक पुत्र राम बाबू निवासी ईदगाह प्रकाश नगर मलिन बस्ती विक्की की दुकान परशुराम मंदिर के पास बैठे थे तभी वहां पर विशाल कुमार पुत्र रामसकल साहनी निवासी ईदगाह प्रकाश नगर मलिन बस्ती वहां पर आया जो शराब के नशे में था उसके पुत्र राधेश्याम ने पूछा कि वह उसके छोटे भाई को शराब पिलाने क्यो ले गया।

इसी बात पर विशाल गुस्से में आकर उसके बेटे के साथ गाली गलौच करते हुए मारपीट करने लगा वहां पर मौजूद राजेश व दीपक ने राधे श्याम को विशाल से छुडाने की काफी कोशिश की लेकिन विशाल उसके पुत्र को मारता-पीटता रहा और जान से मारने की नियत से किसी नुकीली वस्तु से उसके बांयी ओर सिर पर वार कर दिया जिससे वह मौके पर बेसुध हो गया और अभी तक होश नही आया है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

78 लाख की स्मैक सहित बरेली की.. ◀◀ पृष्ठ 1 का शेष

डोईवाला क्षेत्र में अपने पैडलरों के माध्यम से विक्रय कर देती थी। इस तस्कर के तार सीधा बरेली के बड़े तस्करों से जुड़े होने की जानकारी मिली है, जिन पर भी एसटीएफ द्वारा अब आगे की कार्रवाई करने की योजना बनाई जा रही है।

एसटीएफ के अनुसार यह महिला आरोपी पूर्व में भी ड्रग तस्करी के मामले जेल जा चुकी है लेकिन जमानत में आने का बाद फिर ड्रग तस्करी में लिप्त है।

श्री केदारनाथ धाम में तीर्थयात्रियों के लिए... ◀◀ पृष्ठ 1 का शेष

ऐसे बड़े पत्थरों को श्रमिकों द्वारा रात्रि के समय कार्य करते हुए पत्थरों को हटाने का कार्य किया जा रहा है।

उन्होंने यह भी अवगत कराया है कि केदारनाथ यात्रा मार्ग में भारी संख्या में श्रद्धालु आ रहे हैं तथा घोड़े खच्चर भी संचालित हो रहे है जिस कारण छौड़ी गदेरा, रामबाड़ा पुल एवं ग्लेशियर क्षेत्रों में रेलिंग क्षतिग्रस्त हुई है इन स्थानों पर यात्रियों की सुरक्षा के दृष्टिगत रेलिंग का मरम्मत कार्य त्वरित गति से किया जा रहा है ताकि तीर्थ यात्रियों को कोई असुविधा एवं परेशानी न हो तथा कोई अप्रिय घटना घटित न होने पाए।

पानी की समस्या से निजात दिलाने के लिए बनेंगे 4 ओवरहेड टैंकः खंडूडी

संवाददाता

देहरादून। भीषण गर्मी में कोटद्वार की जनता को पेयजल की समस्या से निजात दिलाने के लिए चार ओवरहेड टैंक के निर्माण के लिए विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खण्डूडी भूषण ने अधिकारियों को निर्देश दिये।

कोटद्वार विधानसभा क्षेत्र में भीषण गर्मी से जनता को पेयजल की हो रही परेशानी के समाधान के लिए, अध्यक्ष विधानसभा उत्तराखण्ड ऋतु खण्डूडी भूषण ने देहरादून स्थित शासकीय आवास में उत्तराखण्ड़ अर्बन सैक्टर डप्लामेन्ट ऐजेन्सी वाह्य साहायतीत परियोजना (एडीबी) के अधिकारियों के साथ उच्च स्तरीय बैठक की। बैठक में ऋतु खण्डूडी ने कहा कि कोटद्वार नगर निगम के वार्ड - 4 से वार्ड न०- 26 तक पुराना नगर क्षेत्र कोटद्वार में सम्पूर्ण जल वितरण प्रणाली में 04 ओबर हैड टैंक के निर्माण व 300, किमी लम्बी नयी पाईप लाईन का निर्माण डीएम एस प्रणाली से बनायी जायेंगी। नयी तकनिकी इस्काडा प्रणाली के प्रयोग से एचओटी टुयूबेल के साथ पाईप लाईनों की देखरेख होगीघइससे लिकेज का पता समय पर चल जायेगा। वीपीआरएल कम्पनी इस परियोजना की मेन्टनेस संचालन संरक्षण 18 वर्ष तक करेगी। इस विषय पर और जानकारी देते हुए ऋतु खण्डूडी ने बताया कि इस पेयजल योजना से 22 हजार परिवारों को नये कनेक्शन की सुविधा मिलेगी, साथ ही कोटद्वार शहर को जल संकट की समस्या से काफी हद तक निजात भी मिल जायेगी। योजना के शुभारंभ पर ऋतु खण्डूडी ने खुशी व्यक्त करते हुये कहा कि शहरी क्षेत्र के लिए यह परियोजना मील का पत्थर साबित होगी। अध्यक्ष विधानसभा उत्तराखण्ड ने अधिकारियों को निर्देश दिये कार्य समय सीमा पर पूर्ण हो व कार्य करते समय क्षेत्र में आम जनता को जल समस्या का सामना न करना पड़े इसके लिए कार्यदायी संस्था व जल संस्थान का आपसी सामाजस्य बना रहे। बैठक में विनय मिश्रा एडिशनल प्रोग्राम डारेक्टर, जतीन सैनी परियोजना प्रबन्धक, लोकेश कुमार सहायक अभियंता, राजीव कुमार कन्सलटेंट व श्रद्धा एक्सपर्ट, आदि उपस्थित रहे।

बस्तियों को उजाड़ने की साजिश रची जा रहीः धस्माना

संवाददाता

देहरादून। उत्तराखण्ड मलिन बस्ती विकास परिषद के केन्द्रीय अध्यक्ष सूर्यकान्त धस्माना ने कहा कि सरकार मलिन बस्तियों को उजाडने की साजिश रच रही है जिसको बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

आज सुभाष रोड स्थित एक वेडिंग प्वाइंट में परिषद के आह्वान पर आयोजित सभा में परिषद के केंद्रीय अध्यक्ष वरिष्ठ कांग्रेस नेता सूर्यकांत धस्माना ने ऐलान किया कि हमेशा की तरह उत्तराखंड मलिन बस्ती विकास परिषद मलिन बस्तियों को उजाड़ने के खिलाफ व मलिन बस्तियों को मालिकाना हक दिए जाने की मांग को लेकर संघर्ष करेगा। उन्होंने कहा कि मलिन बस्तियों का तीन दशक पुराना संगठन उत्तराखंड मलिन बस्ती विकास परिषद एक बार फिर मलिन बस्तियों के निवासियों को मालिकाना हक दिए जाने व नगर निगम प्रशासन व सरकार द्वारा मलिन बस्तियों को हटाने के आदेशों के खिलाफ मुखर हो कर आगे आ गया है। उन्होंने सभा में उपस्थित विभिन्न बस्तियों से आए प्रतिनिधियों की सहमति से आगामी 22 मई बुधवार को कांग्रेस मुख्यालय से नगर निगम कूच करने का ऐलान किया। उन्होंने कहा कि अब इस अधूरी लड़ाई को कांग्रेस के बैनर तले उत्तराखंड मलिन बस्ती विकास परिषद सड़कों पर लड़ कर व संघर्ष कर पूरा करेगा। उन्होंने सभा में उपस्थित सभी मलिन बस्ती वासियों से आह्वाहन किया कि वे ज्यादा में ज्यादा संख्या में 22 मई के प्रदर्शन में शामिल हों। निवर्तमान पार्षद ऐतात खान, निवर्तमान पार्षद मुकीम अहमद, निवर्तमान पार्षद संगीता गुप्ता,पूर्व पार्षद राम सुख, कोंग्रेस नेता एस बी थापा, अनिल कुमार,अवधेश कथिरिया,संजय भारती, आनंद सिंह पुंडीर,हरेंद्र बेदी, सरदार जसविंदर सिंह , जया गिलानी, सुमन जखमोला, शुभम सैनी, राइस फातिमा, यामीन खान,अनुजदत्त शर्मा,प्रवीण कश्यप, प्रवीण भारद्वाज, समेत अनेक वक्ताओं ने एक सुर में मालिकाना हक की लड़ाई मजबूती से लड़ने की बात कही। कार्यक्रम का संचालन उत्तराखंड मलिन बस्ती विकास परिषद के महामंत्री दिनेश कौशल ने किया।

20 मई को पांचवें चरण के मतदान के लिए 49 सीटों के लिए डाले जाएंगे वोट

विशेष संवाददाता

नई दिल्ली। 20 मई को होने वाले पांचवें चरण के मतदान के लिए शनिवार को चुनाव प्रचार के अंतिम दिन भाजपा और कांग्रेस नेताओं ने अपनी पूरी ताकत झोंकी। जिन 49 सीटों के लिए इस चरण में मतदान होना है उसमें उत्तर प्रदेश की 14 तथा महाराष्ट्र की 13 सीटों के अलावा पश्चिम बंगाल की 7 व बिहार की 5 सीटें शामिल है। वही उड़ीसा की 5 व झारखंड की तीन सीटें हैं तथा जम्मू-कश्मीर व लद्दाख की एक-एक सीटें है।

2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने इन 49 सीटों में से 32 सीटें जीती थी। लेकिन इस बार 2019 जैसे हालात नहीं है। यूपी की 14 सीटों में से एकमात्र सीट रायबरेली सीट पर ही कांग्रेस जीत सकी थी जबकि भाजपा ने 13 सीटें जीती थी इस बार सपा और कांग्रेस गठबंधन के कारण सभी सीटों पर मुकाबला कांटे का होने वाला है जिसमें अमेठी जहां से केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी और रायबरेली जहां से राहुल गांधी चुनाव लड़ रहे हैं जबरदस्त मुकाबला है। तथा इन दोनों ही सीटों पर कांग्रेस अपनी जीत का दावा कर रही है। भाजपा ने भले ही यूपी की सभी 80 में से 80 सीटों पर जीत लक्ष्य रखा हो लेकिन इस बार वह पिछले चुनाव में 63 सीटें जीतने के बाद इस बार अपने पुराने प्रदर्शन को दोहराती नहीं दिख रही है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को पश्चिम बंगाल के चुनावी दौरे पर थे। जहां उनकी कई जनसभाएं हुई। प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह से लेकर सीएम पुष्कर सिंह धामी तथा राजनाथ सिंह सहित सभी नेता चुनावी कार्यक्रमों में व्यस्त हैं। जहां तक बात महाराष्ट्र की है वहां जिन बदली परिस्थितियों में चुनाव हो रहा है भाजपा को नुकसान की संभावना जताई जा रही है। एनसीपी व शिवसेना के दो-दो हिस्सों में बंट जाने से तथा भाजपा के साथ सिर्फ शिंदे गुट के होने से मुकाबला कड़ा हो गया है। बीते चुनाव में शिवसेना ने सात और भाजपा ने छह सीटें जीत कर सभी 13 सीटों पर कब्जा किया था लेकिन अब यह संभव नहीं है। इस चरण से पूर्व 379 सीटों के लिए मतदान हो चुका है पांचवें चरण की अब 49 सीटों पर मतदान के बाद 543 में से 428 सीटों पर चुनाव संपन्न हो जाएगा बाकी दो चरणों के लिए 115 सीटों पर चुनाव होना शेष रह जाएगा। चुनाव के आखिरी दौर में सभी दल एक-एक सीटों के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

एक नजर

अमेरिका ने चीन से पंचेन लामा के बारे में जानकारी देने को कहा

वाशिंगटन। अमेरिका ने सुदूर हिमालयी क्षेत्र से तिब्बती आध्यात्मिक नेता के लापता होने की 29वीं बरसी के मौके पर चीन से पंचेन लामा के ठिकाने और उनके स्वास्थ्य के बारे में तुरंत जानकारी देने को कहा है। चीन के 11वें पंचेन लामा तिब्बती बौद्ध धर्म में सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक शख्सियतों में से एक हैं और दलाई लामा के बाद वहीं सर्वोच्च धर्मगुरु हैं। 11वें पंचेन लामा जब महज 6 साल के थे तो तभी चीन ने उनका अपहरण कर लिया था और आज उन्हें लापता हुए 29 साल हो गए। अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर के एक प्रेस बयान में कहा, आज 29 साल हो गए जब चीन ने तिब्बती बौद्ध धर्म के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक, 11वें पंचेन लामा का अपहरण कर लिया। तब उनकी उम्र 6 साल की थी गेधुन चोएक्यी न्यिमा लापता हैं और उस दिन के बाद से सार्वजनिक रूप से दिखाई नहीं दिए हैं। अमेरिकी विदेश विभाग के बयान के मुताबिक, अमेरिका तिब्बतियों के मानवाधिकारों और उनकी विशिष्ट धार्मिक, सांस्कृतिक और भाषाई पहचान के संबंध में उनके अधिकारों का समर्थन करता है। बयान में कहा गया है, तिब्बतियों को, सभी धार्मिक समुदायों के सदस्यों की तरह, अपने स्वयं के विश्वासों के अनुसार और सरकारी हस्तक्षेप के बिना, दलाई लामा और पंचेन लामा जैसे अपने स्वयं के नेताओं को चुनने, शिक्षित करने और सम्मान देने का अधिकार मिलना चाहिए।

जनता उन्हें सत्ता में लाएगी, जो राम को लेकर आये हैं: योगी आदित्यनाथ

आजमगढ़। उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में एक सार्वजनिक रैली को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भारतीय जनता पार्टी की तारीफ करते हुए विपक्ष पर जमकर हमला बोला। सीएम योगी ने कहा कि जब भी हम मौजूदा लोकसभा में 400 सीटें पार करने की बात करते हैं तो कांग्रेस और समाजवादी पार्टी घबरा जाती हैं। मुख्यमंत्री योगी ने कहा, पूरे देश में एक ही आवाज गूंज रही है, फिर एक बार मोदी सरकार, अब की बार 400 पारश। जब भी हम 400 सीटें पार करने की बात करते हैं तो कांग्रेस और समाजवादी पार्टी तनाव में आ जाती हैं। उन्हें लगता है कि कोई कैसे ऐसा कर सकता है, कैसे कोई 400 सीटों का आंकड़ा पार कर सकता है? उन्होंने आगे कहा कि लोग अयोध्या में राम मंदिर के मुद्दे पर केवल भाजपा को वोट देंगे। योगी ने कहा, ऐसे लोगों की आवाज आती है, जो कहते हैं कि हम उन्हें लाएंगे जो भगवान राम को लेकर आए। यह पूरा चुनाव राम भक्त और राम द्रोही के बीच है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि आजमगढ़ में बड़ी तेजी से विकास हो रहा है।

पाकिस्तान से करतारपुर साहिब को वापस लेंगे:सुखबीर सिंह बादल

चंडीगढ़। शिरोमणि अकाली दल ने बीते शनिवार को लोकसभा चुनाव के लिए अपना चुनावी घोषणापत्र जारी किया और कहा कि वह पाकिस्तान के साथ भूमि विनिमय का समझौता करके करतारपुर साहिब को पाकिस्तान से भारत में ले आयेगा। पंजाब में 1 जून को होने वाले लोकसभा चुनाव के लिए पार्टी का घोषणापत्र जारी करते हुए सुखबीर सिंह बादल ने कहा कि उनकी पार्टी चंडीगढ़ और राज्य से बाहर रह गए अन्य पंजाबी भाषी क्षेत्रों को शामिल करने के लिए लड़ाई फिर से शुरू करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा, चंडीगढ़ को स्पष्ट रूप से पंजाब का हिस्सा घोषित कर दिया गया था और केवल पांच साल तक केंद्र शासित प्रदेश बना रहना था। हम इस मामले में पंजाब के साथ केंद्र के विश्वासघात के खिलाफ नई ताकत से लड़ेंगे। चंडीगढ़ पंजाब और हरियाणा की संयुक्त राजधानी है। बादल ने अपने घोषणापत्र को ऐलान-नामा बताते हुए कहा कि पार्टी दोनों देशों के बीच आपसी भूमि विनिमय के माध्यम से करतारपुर साहिब को पाकिस्तान से भारत में स्थानांतरित करने के लिए अपने जनादेश का उपयोग करेगी। बादल ने कहा, पार्टी भारत सरकार के माध्यम से काम करने का वादा करती है ताकि करतारपुर साहिब के तीर्थयात्रियों के लिए पासपोर्ट की आवश्यकता को खत्म किया जा सके और इसे एक सरल परमिट प्रणाली के साथ प्रतिस्थापित किया जा सके। करतारपुर गलियारा पाकिस्तान में गुरुद्वारा दरबार साहिब, सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव के अंतिम विश्राम स्थल, को गुरदासपुर जिले में डेरा बाबा नानक मंदिर से जोड़ता है।

सरकार दून घाटी अधिसूचना 1989 निष्क्रय करने का निर्णय वापस ले: थापर

हमारे संवाददाता

देहरादून। दून घाटी के 15 लाख निवासियों और पर्यावरण को बचाने हेतु सरकार को दून घाटी अधिसूचना 1989 निष्क्रिय करने का निर्णय वापिस लेना ही होगा, नहीं तो कांग्रेस एक बड़ा जनान्दोलन खड़ा करने पर मजबूर होगी।

यह बात आज कांग्रेस मुख्यालय देहरादून में आयोजित पत्रकार वार्ता के दौरान उत्तराखण्ड कांग्रेस प्रवक्ता अभिनव थापर द्वारा कही गयी। उन्होने कहा कि दून घाटी की अधिसूचना 1989 को उत्तराखंड राज्य सरकार द्वारा निष्क्रिय करनें हेतु जो भारत सरकार द्वारा शासनादेश 21 दिसंबर 2023 को निकाला गया है, उसे सरकार को वापस लेना होगा।

विदित हो कि दून घाटी अधिसूचना 1989 में 1 फरवरी 1989 को दून घाटी क्षेत्र को पर्यावरण मुक्त व अन्य पर्यावरण के विषय पर संवेदनशील होने के कारण लाइम स्टोन माइनिंग और एयर क्वालिटी इन्डैक्स के सुधार हेतु सुप्रीम कोर्ट के 30 अगस्त 1988 के निर्देशानुसार दून घाटी का प्रावधान किया गया था। जिससे देहरादून और उसके आसपास के क्षेत्र मसूरी, सहसपुर, डोईवाला, ऋषिकेश, विकासनगर, और इनके आस पास के इलाकों को बचाया जा सके।

थापर ने कहा कि किंतु राज्य सरकार के प्रस्ताव पर पर्यावरण वन व जल वायु मंत्रालय द्वारा 21.12.2023 को दून घाटी अधिसूचना 1989 निष्क्रिय करने हेतु शासनादेश जारी किया गया जिस पर राज्य सरकार को दून घाटी में जो बैन थे, भारी औघोगिक गतिविधि जो उनको संचालित करने का अधिकार भी दिया गया जैसे स्लॉटर हाउस, क्रशर माइनिंग और अन्य औघोगिक गतिविधि हेतु। उल्लेखनीय है की राज्य की डबल इंजन सरकार ने पुन: प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देश से उल्टा यह कार्य दून घाटी अधि

सूचना हटाने का काम किया है क्योंकि भारत सरकार द्वारा 2019 में नैशनल क्लीन एयर प्रोग्राम शुरू किया गया जिसमे भारत के 131 उन शहरों को चयनित किया गया जिनकी आबोख़हवा में प्रदूषण की मात्रा अधिक थी और उनके सुधार हेतु भारत सरकार ने 10422. 73 करोड़ रुपए का प्रावधान भी किया गया है। जिसमें उत्तराखंड के 3 शहर देहरादून, ऋषिकेश और काशीपुर को शामिल किया गया और इनके पर्यावरण सुधार हेतु 2021 में लगभग 68 करोड़ रुपए का बजट भी भारत सरकार द्वारा राज्य सरकार को जारी किया और देहरादून और ऋषिकेश दोनो ही पूर्णत: दून घाटी क्षेत्र के अंतर्गत आते है और इसके उलट राज्य सरकार यहां दून घाटी अधिसूचना हटाने का कार्य कर रही है। भारत सरकार के विशेषज्ञों की रिपोर्ट के अनुसार "देहरादून का प्रदूषण स्तर देश के 10 सबसे बुरे शहरों" में आता है।

उत्तराखंड सरकार ने दून घाटी अधिसूचना 1989 को हटाने का जो प्रावधान किया है उसके विरोध में कांग्रेस प्रवक्ता अभिनव थापर ने प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को 8 फरवरी 2024 को पत्र प्रेषित किया और सुप्रीम कोर्ट के आदेश दि. 30.08.1988, दून वैली एक्ट दि. 01. 02.1989 व एनसीएपी प्रोग्राम भारत सरकार की रिपोर्ट 6 फरवरी 2024 का उल्लेख करते हुए प्रधान मंत्री कार्यालय को दून घाटी को बचाने के लिए ध्यान आकर्षित किया। इस पत्र के क्रम में प्रधान मंत्री कार्यालय हस्ताक्षेप के बाद एमओईएफ ने वन विभाग उत्तराखंड को इस विषय में रिपोर्ट जारी करने के लिए 13 फरवरी 2024 को पत्र लिखा किंतु अभी तक इस पर कोई कार्यवाही गतिमान होते हुए नजर नहीं आ रही है।

उल्लेखनीय है की अस्थाई तौर पर भारत सरकार का आदेश कांग्रेस प्रवक्ता अभिनव थापर के प्रधानमंत्री कार्यालय के पत्राचार के बाद रुका हुआ है, किंतु इस निर्णय को वापिस लेने का कार्य राज्य सरकार को ही लेना होगा। कांग्रेस प्रवक्ता अभिनव थापर ने कहा कि हम देहरादून, मसूरी, सहसपुर, डोईवाला, ऋषिकेश , विकासनगर और आसपास का क्षेत्र जो दून घाटी के अंतर्ग्रत आता है उसको बचाने की लड़ाई हम हर स्तर पर लड़ेंगे। प्रधान मंत्री कार्यालय के हास्ताक्षेप के बाद भी यदि उत्तराखंड सरकार जाग नही रही है तो ये राज्य सरकार का दुर्भाग्यपूर्ण रवैया है। उन्होने कहा कि हम इसके खिलाफ बड़े जनान्दोलन को मजबूर होगें। पत्रकार वार्ता में प्रवक्ता अभिनव थापर, महानगर अध्यक्ष डॉ जसविंदर सिंह गोगी, ऋषिकेश के पूर्व कांग्रेस प्रत्याशी जयेंद्र रमोला, यमुनोत्री अध्यक्ष दिनेश चौहान, याकूब सिद्दीकी और सुलेमान अली ने भाग लिया।

अंतर्राज्यीय टप्पेबाज गैंग के तीन सदस्य गिरफ्तार, माल बरामद

हमारे संवाददाता

नैनीताल। अंतर्राज्यीय स्तर पर टप्पेबाजी करने वाले गैंग का खुलासा करते हुए पुलिस ने गैंग के तीन सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया है। जिनके कब्जे से टप्पेबाजी कर चुराया गया माल भी बरामद हुआ है। आरोपियों द्वारा उत्तराखण्ड पुलिस के एक जवान की पत्नी के साथ विगत दिनों टप्पेबाजी की घटना को अंजाम दिया गया था।

जानकारी के अनुसार बीती 16 मई को उत्तराखण्ड पुलिस के जवान संजय सिंह राणा की पत्नी नीमा राणा जो विवाह कार्यक्रम में सम्मिलित होने हेतु रूद्रपुर से हल्द्वानी के लिए मैजिक वाहन में आ रही थी इस दौरान अज्ञात चोरों द्वारा उनके बैंग में रखे जेवरात व नगद धनराशि को चोरी कर लिया गया था।

घटना पुलिस के सिपाही के परिजन के साथ घटित होने पर पुलिस ने तत्काल आरोपियों की तलाश शुरू कर दी गयी। आरोपियों की तलाश में जुटी पुलिस टीम द्वारा बीते रोज एक सूचना के बाद घटना में शामिल तीन आरोपियों को चोरी किये गये माल सहित काशीपुर रोड रूद्रपुर से गिरफ्तार कर लिया गया है। जिन्होने पूछताछ में अपना नाम सद्दाम पुत्र खुर्शीद, एहसान अली पुत्र शेर मोहम्मद व नवाब अली पुत्र भूरे निवासी हमीदाबाद थाना बिलासपुर जिला रामपुर उ.प्र. बताया।

बताया कि उनका एक गैंग है जो भिन्नख़भिन्न स्थानों पर जाकर टैम्पू, मैजिक व बस स्टैण्ड के आसख़पास रैकी करते हैं इस दौरान अपने साथ सामान ले जाने वाले लोगों को चिन्हित कर जिस वाहन में वो बैठते हैं उसमें गैंग के सदस्य भी बैठ जाते हैं और मौका देखकर यात्री का बैग/ अटैची आदि ब्लैड आदि से काटकर खोलकर उसके अन्दर से किमती सामान चोरी कर लेते हैं। उन्होने बताया कि इससे पूर्व भी वह जनपद रामपुर बरेली व रूद्रपुर से टप्पेबाजी के मुकदमों गिरफ्तार किये जा चुके हैं।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।